असंशोधित

बिहार विधान–सभा वादवृत्त

सरकारी प्रतिवेदन

28 जुलाई, 2017

षोडश विधान-सभा शुक्रवार,तिथि 28 जुलाई,2017 ई0

षष्ठम् सत्र 06 श्रावण,1939(शक)

(कार्यवाही प्रारम्भ होने का समय - 11.00 बजे पूर्वाह्न)

(इस अवसर पर माननीय अध्यक्ष महोदय ने आसन ग्रहण किया)

अध्यक्ष : सभा की कार्यवाही प्रारम्भ की जाती है ।

प्रारम्भिक सम्बोधन

अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, षोडश बिहार विधान सभा के इस विशेष सत्र में मैं आप सभी माननीय सदस्यों का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ ।

इस उपवेशन में वर्त्तमान मंत्रिपरिषद् द्वारा लाये गए विश्वास प्रस्ताव पर विमर्श होगा ।

माननीय सदस्यगण, लोकतंत्र वह व्यवस्था है जो सरकार पर जनता के प्रभाव और नियंत्रण को निरंतर बनाए रखने के लिए अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण करती है। कानून का शासन, कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका के मध्य अधिकारों का समुचित एवं संतुलित बंटवारा तथा व्यक्तिगत अधिकारों और स्वतंत्रताओं की गारंटी इस व्यवस्था की अनिवार्य शर्त्तें हैं । संसदीय प्रणाली में आप जनता की इच्छाओं को प्रकट करने वाले वाहक हैं और उनकी आकांक्षाओं को मूर्त्त रूप देना आपका दायित्व है ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि सदन के सफल संचालन में आप सभी माननीय सदस्यों का सकारात्मक सहयोग प्राप्त होगा ।

माननीय सदस्यगण, विभिन्न दलों से विधान-सभा सचिवालय को प्राप्त सूचनाओं के आधार पर मुझे दो घोषणायें करनी हैं- पहली, मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार को बिहार विधान सभा में सदन नेता के रूप में मान्यता दी जाती है । दूसरी, माननीय सदस्य श्री तेजस्वी प्रसाद यादव को बिहार विधान सभा में नेता विरोधी दल के रूप में मान्यता प्रदान की जाती है ।

माननीय सदस्यगण, अब मैं वर्त्तमान मंत्रिपरिषद् में सदन के विश्वास के प्रस्ताव को लेता हूँ ।

माननीय मुख्यमंत्री ।

टर्न-1/आजाद

प्रस्ताव

श्री नीतीश कुमार,मुख्यमंत्री : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूँ कि :

> ''यह सभा वर्त्तमान राज्य मंत्रिपरिषद् में विश्वास व्यक्त करती है । ''

अध्यक्ष : माननीय नेता, विरोधी दल ।

श्री तेजस्वी प्रसाद यादव,नेता विरोधी दल : महोदय, मैं सदन में लाये गये विश्वास मत के विरोध में खड़ा हूँ । मैं विरोध में इसलिए खड़ा हूँ क्योंकि 2015 का जो मैनडेट मिला था, जिन गरीब-गुरबों, पिछड़े वर्ग, अतिपिछड़े वर्ग, दलित वर्ग, महादलित वर्ग, अल्पसंख्यक वर्ग, प्रगतिशील वर्ग ने जो जनादेश देने का काम किया था, वह जनादेश महागठबंधन को देने का काम किया था और भाजपा के खिलाफ मैनडेट था । मेरा मानना है कि आज भाजपा के साथ मिल करके जो सरकार बनायी गयी, यह लोकतंत्र की हत्या है और बिहार की तमाम जनता के साथ यह धोखा हुआ है । इसलिए हमारा कर्त्तव्य बनता है कि यह जो छल, प्रपंच, कपट और नकारात्मक राजनीति हुई है, जो जोड़-तोड़ की बात चली है, मेरा स्पष्ट मानना है, मेरा ही नहीं बल्कि पूरा देश का मानना है कि यह पहले से ही प्री-प्लान्ड था । मैं कुछ पीछे जाकर के पहले की बातें बताना चाहूँगा और मैं सदन के नेता से जवाब की अपेक्षा करूँगा और पूरा देश और बिहार की जनता इन सवालों का जवाब मांग रही है ।

महोदय, आपको पता होगा 16जून, 2013 से 26जुलाई, 2017 तक यह बिहार की जनता जानना चाहती है, इन चार सालों में बिहार का समय क्यों बर्बाद किया गया ? जब पहले ही भाजपा के साथ थे तो चार साल में चार सरकारें बनायी गयी और सरकार बनाने के बाद जो समय व्यर्थ किया गया, किस प्रकार से बार-बार सरकार बनती है और बिगड़ती है । अधिकारी को समय नहीं मिल पाता है, कंफ्यूज लोग रहते हैं तो यह जो चार साल बिहार का विकास का नुकसान हुआ है, बिहार की जनता इसका जवाब मांगना चाहती है कि ये चार सरकारें बदली है, ये चार सरकारों का गठन जो हुआ, वह क्यों हुआ ? किसके लिए हुआ या केवल एक व्यक्ति विशेष का इंडिविजुअल मामला होकर के, एक इंडिविजुअल के कारण ये चार सरकारें बनी, यह बिहार की जनता जानना चाहती है ? साथ ही साथ महोदय, आपको हम बताना चाहेंगे कि इसका कारण क्या था इन चार साल का ? क्या इसका कारण बी0जे0पी0 थी, चार बार सरकारें बनाने की बात आयी, क्या इसका कारण आर0जे0डी0 था, क्या इसका कारण मांझी जी थे या नीतीश जी थे ? यह बिहार की जनता, सब लोग जानते हैं लेकिन यह बताना चाहिए सदन को कि इसका जिम्मेवार कौन था ? इन चार सालों में कितना बड़ा नुकसान बिहार की जनता

को हुआ ? एक इंडिविजुअल की छवि दिखलाने के लिए, एक इंडिविजुअल को बेनीफिट पहुँचाने के लिए और यह ड्रामा लगातार इतने सालों से चलता रहा है, यह हमलोगों के समझ से परे है । कभी भाजपा के लोग इधर बैठते हैं, कभी भाजपा के लोग उधर बैठते हैं । कभी हम उधर बैठते हैं और कभी हमको यहां पर बैठना पड़ता है। यहां लोकतंत्र की बात की जाती है, डेमोक्रेसी की बात की जाती है तो यहां जनता मालिक होती है । जब जनता ने एक सरकार को चुनने को काम किया, महागठबंधन को मैनडेट देने का काम किया तो यह 5 साल चलना चाहिए था । लेकिन यह क्यों नहीं चला ? हम तो कहते हैं, बी0जे0पी0 के लोग यहां मौजूद हैं, आज सरकार में हैं, हम उनसे भी पूछना चाहेंगे कि 2013 में नीतीश कुमार जी ने सारे मंत्रियों को बर्खास्त क्यों किया ? इसका क्या कारण था ? क्या आपलोगों ने भ्रष्टाचार किया था ? क्या आपलोगों ने सरकार में इन्टरफेरेंस करने का काम किया था ? इसका जवाब आज भाजपा के लोगों को देना चाहिए । दूसरा, कितनी भद्दी-भद्दी गालियां आपलोगों ने अपनी मनपसंद की गालियां माननीय मुख्यमंत्री जी को देने का काम किया था । हम बताना नहीं चाहेंगे लेकिन आप यह देखिए । आपके पास 91 एम0एल0ए0 थे, हम आप लोगों से बोल रहे हैं, बी0जे0पी0 को एड्रैस कर रहे हैं ......

अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, कृपया आपस में टोका-टोकी नहीं करें । जैसे अभी नेता विरोधी दल बोल रहे हैं और सब लोग सुन रहे हैं, ठीक उसी तरीके से जब कोई भी माननीय सदस्य बोलेंगे तो सारा सदन इसी तरह शांति से सब लोगों की बात सुनेगा ।

श्री तेजस्वी प्रसाद यादव,नेता विरोधी दल : मैं कहना चाहता हूँ , जब भाजपा के पास 91 उस समय एम0एल0ए0 थे, तब जिस तरह से दूध में मक्खी गिर जाती है तो मक्खी को दूध से निकाल दिया जाता है, उसी तरह से आप लोगों को निकाल दिया गया । क्यों निकाल दिया गया ? हमारे पास तो 80 विधायक थे, फिर भी नीतीश कुमार जी ने हिम्मत नहीं जुटायी कि हमको बर्खास्त कर सकें, राजद के लोगों को बर्खास्त कर सकें क्योंकि वे जानते हैं कि हमलोग स्वाभिमानी लोग हैं, आपलोग सत्ता के लालची लोग हैं, भाजपा के लोग । ये जवाब आपलोगों को भी फिल्ड में जाकर देना पड़ेगा और सारी बातें विस्तार रूप से हम प्रकट करना चाहेंगे सदन में लेकिन हम इतना जरूर कहना चाहेंगे कि हमारे जो 20 महीने थे सरकार में, वे 29 महीना से काफी बेहतर था । 29 महीने का मतलब कि जब नीतीश जी सरकार में थे 16जून, 2013 से 20 नवम्बर, 2015 यानी 29 महीने इनके और 20 महीने जब हम थे । हम कहना चाहते हैं कि हमारी जब सरकार थी तो सब कुछ अच्छा था और इनके 29 महीने में किस तरह से सारी चीजें हुई हैं, वह सबको पता है । महोदय, उनको हारने से ही नहीं बल्कि उनका राजनीतिक वजूद खतम होने से, नीतीश जी को हारने से ही बचाने का काम नहीं किया आर0जे0डी0 और कांग्रेस ने बल्कि उनका राजनीतिक वजूद आर0जे0डी0 और कांग्रेस ने बचाने का काम

किया । महोदय, हम यह कहना चाहते हैं कि जहां तक छवि की बात है, जहां तक विकास पुरूष की बात है तो जब-जब ये विकास पुरूष अकेले चुनाव लड़े और यह पूरा देश जानता है कि नीतीश जी का कितना बड़ा आधार है बिहार की राजनीति में । आपको कुछ आंकड़ा गिनाना चाहेंगे । नीतीश कुमार जी जब अकेले चुनाव लड़े 1995 में तब झारखंड और बिहार एक था, 324 सीटें हुआ करती थी लेकिन मात्र केवल 7 सीट पर सिमट कर आ गये । इसमें ज्यादा दूर नहीं जाना है महोदय, 2014 के लोकसभा के चुनाव में जदयू जब अकेला लड़ा था तो केवल मात्र 2 सीट पर ही सिमट कर रह गये । ...... क्रमशः .....

टर्न-2/अंजनी/28.07.17

श्री तेजस्वी प्रसाद यादव(नेता विरोधी दल)..क्रमशः...... शायद यह इनकी छवि का ही असर है, इनके काम का ही शायद असर है कि जब-जब नीतीश कुमार जी अकेले लड़ते हैं तो इक्का-दुक्का सीट पर ही सिमट कर रह जाते हैं । इनको कहीं-न-कहीं या तो भाजपा की तरफ या तो आर0जे0डी0 की तरफ आना पड़ता है, तो कौन-सा सिद्धांत, कौन-सी विचारधारा, कौन-सी नैतिकता, यह बिहार की जनता जानना चाहती है नीतीश कुमार जी से, मुख्यमंत्री जी से । यह कौन-सी विचारधारा है । महोदय, जो आरोप हम पर लगे हैं, हमारे परिवार पर लगे हैं, सुशील मोदी जी बैठे हैं, चार महीने से, पांच महीने से ये लगातार आरोप लगाते रहे हैं । जब आरोप लगा तो जदयू के लोग खामोश क्यों थे ? उस समय जीरो टोलरेंस की नीति नहीं थी ? सुशील मोदी जी के कहने के अनुसार, वे तो कहते थे कि बड़ा उनके पास सबूत है तब जदयू के प्रवक्ता कुछ दिन पहले तक अमरूद खाते रहे, चुप्पी साध रखी । क्यों नहीं उस वक्त कोई कुछ बोला ? यह आरोप एक राजनीतिक षडयंत्र के हिसाब से, पॉलिटिकल वेनडेटा के हिसाब से, एक मात्र एक्सक्यूज कि नीतीश जी भाजपा में कैसे जायें, इसका एक एक्सक्यूज ढूंढने के लिए ये सुनियोजित ढंग से ही पहले से ही यह कार्यक्रम इन लोगों का चल रहा था, इन लोगों की मिलीभगत थी कि किस प्रकार से महागठबंधन छोड़ें और भाजपा में जायें । यह पूरी तरीके से प्लानिंग की गयी थी और इस प्लानिंग में जो परसों रात जिस तरह से बातें हुई, तुरंत हड़बड़ में जिस प्रकार से माननीय मुख्यमंत्री जी ने रिजाइन दिया, इसका मुझे बहुत दुःख है । मुझे इसका इसलिए दुःख है कि जो महागठबंधन के कार्यक्रम चल रहे थे और दो साल इनके अंतर्गत हमने काम किया और सच बतायें तो हमारा कभी-भी मुख्यमंत्री जी से या आर0जे0डी0 का या हमारे नेता लालू जी का कभी-भी कोई ऐसा दबाव नहीं रहा । हमने पूरे विश्वास के साथ इनको मुख्यमंत्री बनाने का काम किया सिंगल लारजेस्ट पार्टी होने के बावजूद भी और मुख्यमंत्री जी हमको हमेशा कहा करते

थे, अशोक चौधरी जी को भी कहा करते थे कि अब आप ही लोग भविष्य हैं, आप लोगों को लड़ना है लेकिन लड़ना है किससे से ? ये किससे कहते थे, इनका मतलब क्या था ? संघियों से, भाजपा से और यह भी बोलते थे कि ये लोग बहुत बड़े साजिशकर्त्ता हैं, इन लोगों से आप लोग बचकर रहिएगा और देश को भी बचाने का काम कीजियेगा आगे । हमलोगों का तो उम्र समाप्त हो गया है, राजनीति समाप्त हो गयी है, अब आप ही लोगों को देखना है । तब आज क्या बात आ गई ? देखिए सुशील मोदी जी हंस रहे हैं । आपको शर्म नहीं आयी सुशील मोदी जी कि आप सत्ता में आ गये ? आपको अपमान महसूस नहीं हुआ ?

(व्यवधान)

अध्यक्ष : शांति,शांति । बैठ जाइए ।

श्री तेजस्वी प्रसाद यादव,नेता, विरोधी दलः अब तो आप सरकार में हैं, अब तो आपलोग सुनने की आदत डाल लीजिए ।

अध्यक्ष : शांति-शांति ।

श्री तेजस्वी प्रसाद यादव,नेता, विरोधी दलः महोदय, शर्म शब्द तो अनपार्लियामेंट्री है नहीं ।

(व्यवधान)

आप बी0जे0पी0 के साथ चले गये हैं तो क्या यहां विरोधियों को भी बोलने नहीं दिया जायेगा ?

अध्यक्ष : आप बैठिए । बैठ जाइए । माननीय नेता प्रतिपक्ष, आप तो अच्छा बोल रहे थे, उत्तेजक शब्दों का इस्तेमाल नहीं करिए ।

श्री तेजस्वी प्रसाद यादव,नेता विरोधी दल : अनपार्लियामेंट्री शब्द तो है नहीं, उसको क्यों हटाया जाय? अनपार्लियामेंट्री वर्ड तो है नहीं ।

(व्यवधान)

अध्यक्ष : आप बैठिए न । आप बैठिए ।

श्री तेजस्वी प्रसाद यादव,नेता, विरोधी दल : सच सुनने की हिम्मत नहीं है । आपको भी समय मिलेगा तो बोलिएगा । आपका समय एलॉट है, आप बोलेंगे, आपके नेता बोलेंगे । बोलने दीजिए, नौजवान की आवाजों को दबाया जा रहा है, युवाओं का आप लोग विरोध करते हैं, बोलने दीजिए ।

अध्यक्ष : जो भी असंसदीय शब्द का उपयोग होगा, उसे सदन की कार्यवाही से निकाल दिया जायेगा । आप अपनी बात जारी रखें । आप बैठिए न, बैठिए ।

श्री तेजस्वी प्रसाद यादव, नेता, विरोधी दल : हमलोग इसका उपयोग भी नहीं कर रहे हैं । लगातार एलिगेशन लगते रहे । अब तक हमारे कहने का यही मतलब रहा कि यह सुनियोजित ढंग से पहले से ही इनकी बातचीत तय थी । तेजस्वी एक बहाना था, इनको बीजेपी में जाना था, इसलिए यह सारा ढकोसला किया गया और मुझे दुःख होता है कि एक 28

साल का नौजवान, एक उप मुख्यमंत्री और बिहार में जिसकी सबसे ज्यादा आबादी है युवाओं की, 60 फीसदी है और जब आज युवा डिसीजन मेकिंग में, पॉलिसी मेकिंग में बैठता है तो किस-किस प्रकार से निगेटिव राजनीति हो रहा है, यह सारी चीज हम 28 साल की उम्र में देख रहे हैं । झूठा मुकदमा भी झेल रहे हैं 28 साल की उम्र में और 28 साल की उम्र में जितने झूठे मुकदमे, जितना अन्याय . ..

(व्यवधान)

अध्यक्ष : आप सब लोग बैठिए ।

श्री तेजस्वी प्रसाद यादव(नेता विरोधी दल) : महोदय, अब हम क्या गलत बोल दिये ।

अध्यक्ष : आप सब लोग बैठिए । तेजस्वी जी ।

श्री तेजस्वी प्रसाद यादव,नेता विरोधी दल: हम कहना चाहते हैं कि 28 साल की उम्र में क्या-क्या हमको नहीं देखना पड़ रहा है और इतनी कम उम्र में शायद ही कोई व्यक्ति अपने राजनीतिक कैरियर में, शुरूआत की दौर में यह सारी चीजें झेल रहा हो । मेरे कहने का मतलब है कि जितने युवा, हम जैसे युवा जो राजनीति में आना चाहते हैं, जो स्वच्छ राजनीति करना चाहते हैं, जो अपने राज्य का विकास करना चाहते हैं, देश को प्रगति की ओर ले जाना चाहते हैं, वह आज दु:खी होगा, उदास होगा, मायूस होगा कि देखो नौजवान को मोहरा बनाकर के कोई अपनी छवि बनाने में लगा हुआ है, कोई अपनी राजनीति चमकाने में लगा हुआ है, बिहार की जनता और देश का नौजवान यह देखने का काम कर रहा है । इसका जवाब आप लोगों को बिहार की जनता और देश की जनता को देना पड़ेगा कि ऐसे युवा जो राजनीति करना चाहते हैं, स्वच्छ राजनीति करना चाहते हैं, ईमानदारी से अपना काम किया दो सालों में, वह माननीय मुख्यमंत्री जी जानते हैं । ईमानदारी की इसलिए हम बात करते हैं कि क्योंकि इनको पता होगा कि पथ निर्माण विभाग हमारे पास था और जितने वर्किंग डिपार्टमेंट थे, पहले जितने टेंडर के फाईल आते थे, ई0ओ0टी0 के फाईल आते थे, वेरिऐशन्स के फाईल आते थे, वह मंत्रियों तक आते थे । हमारे आने के बाद हम प्रोपोजल लेकर गये मुख्यमंत्री के पास गये, कैबिनेट से हमने प्रोपोजल पास कराया कि मंत्री के पास कोई टेंडर का फाईल नहीं आयेगा, कोई वेरिऐसन का फाईल नहीं आयेगा, कोई ई0ओ0टी0 का फाईल नहीं आयेगा लेकिन कैबिनेट में किन लोगों ने विरोध किया यह मुख्यमंत्री जी जानते हैं, अच्छे से जानते हैं । आप बताइए कि टेंडर का फाईल, वेरिऐसन का फाईल आने का मतलब क्या है ? इसका मतलब क्या है? हमने एक कमिटी बनायी प्रधान सचिव के नेतृत्व में । मंत्रियों को तो पता नहीं होता है कि कितना ईंट लगेगा, कितना सीमेंट लगेगा, किसको कितना एक्सटेंसन देना है, नहीं देना है, आज अगर वह हुआ होता, गलती से अगर हमारे पास टेंडर का फाईल आया होता क्योंकि प्रोपोजल तो इंजिनियर देता है, तब तो हमको भी फंसा दिया जाता । बोला जाता कि इन्होंने धोखा दिया, टेंडर की सिफारिश की या

काम किया तो यह मुख्यमंत्री जी जानते हैं कि हमने किस प्रकार से ईमानदारी से अपने डिपार्टमेंट में काम करने का काम किया तो आज देश का नौजवान दु:खी होगा महोदय । जब रेड पड़ा था तो मुख्यमंत्री जी बीमार पड़ गये थे, उनको राजगीर जाना पड़ा । मीरा कुमार जी को आना था तो बीमार पड़ गये, लगातार आप देखे होंगे कि राष्ट्रपति का चुनाव, दो बैठकें हुई, एक दिन पहले भी, बैठक से पहले सोनिया जी से नीतीश कुमार जी मिले, बातें की, एजेंडा पर बातें की या किस पर बातें की लेकिन विपक्षी एकता के बारे में तो लगातार बोलते रहे मुख्यमंत्री जी ।

(क्रमश:)

टर्न-3/शंभु/28.07.17

श्री तेजस्वी प्रसाद यादव,ने0वि0द0 : क्रमश:.......एजेंडा पर बातें की या किस पर बातें की लेकिन विपक्षी एकता के बारे में तो लगातार बोलते रहे हैं मुख्यमंत्री जी । अचानक से क्या हुआ कि बैठक में न जाकर अगले दिन प्रधानमंत्री के साथ लन्च करने का काम करते हैं तो हमलोग इतने अंजान और इतने बेवकूफ नहीं हैं कि ये बातें हमलोगों के समझ में नहीं आता कि भाई पहले से ही इनका मन बना हुआ था आप लोगों के साथ जाने का। महोदय, लगातार लालू जी ने प्रयास किया कि महागठबंधन अटूट रहे, जनता के मैनडेट का सम्मान रहे, लगातार जब राजगीर गये मुख्यमंत्री जी बीमार पड़े, स्वास्थ्य ठीक नहीं था, लेकिन लगातार फोन करते रहे तो यह बताया गया कि शायद बीमार हैं, बात नहीं हो सकती है, लेकिन एक बार भी मुख्यमंत्री जी का फोन नहीं आया या एक बार भी इस विषय पर हमसे नहीं बात की गयी कि आप इस्तीफा दीजिए। यह बातें क्यों नहीं पूछी गयी ? नीतीश कुमार जी भी यहां बैठे हैं, हम 40 मिनट तक इनके कमरे में भी बैठे रहे तो यही बात हो रही थी कि एक्सप्लेनेशन आप दे दीजिए जो माहौल है, इसमें एक्सप्लेनेशन दीजिए यह आपके लिए भी ठीक रहेगा और आपको पता होगा- रिजिगनेशन तो हमसे मांगा ही नहीं गया तो उसपर बात ही नहीं की गयी- भाजपा तो कोई आरोप लगाता रहा कितने और भी आरोप इन दो सालों में नीतीश जी पर और जदयू के लोगों पर लगाया गया क्या उसपर संज्ञान लिया गया ? नहीं लिया गया तो हम इन सारे विषयों में नहीं जाना चाहते हैं। मेरा यही कहने का मतलब है महोदय कि हमारी कोशिश लगातार रही कि महागठबंधन एक रहे, अटूट रहे और जब नीतीश कुमार जी को साफ तौर पर मैंने यह भी कहा विश्वास के साथ, भरोसे के साथ कि नीतीश जी आप बताइये कि हम इसमें क्या-क्या कर सकते हैं, किसको जवाब दें और क्या जवाब दें आप यह भी ड्राफ्ट तैयार करके दे दीजिए हम यह भी बोलने के लिए तैयार हैं, इतना

कुछ हमने कहा मुख्यमंत्री जी को लेकिन मुख्यमंत्री जी को शायद कंपनी के बारे में जानकारी नहीं है, क्या है नहीं है, जानकारी नहीं थी या क्या था, लेकिन हमने यह भी बोला कि जो एफ0आई0आर0 हमपर हुआ है, हमारे परिवार के उपर हुआ है इसमें कई त्रुटियॉं हैं, गड़बड़ियां हैं। हमने जितने भी लीगल एडवाइस लिया है उनका यही कहना था कि अगर इसको आपलोग बोलियेगा तो इसमें जितनी त्रुटियां हैं बाद में चूंकि केन्द्र की एजेंसी है, बी0जे0पी0 की सरकार है वहां कई चीजें एफ0आई0आर0 में मेकअप कर लेगी। इसलिए लीगल प्लेटफॉर्म से हमसे जहां पूछा जायेगा, हम तो तैयार हैं बोलने के लिए उससे हमको इनकार कहां करना है, लेकिन यह बताइये कि दो साल में हमलोगों ने कौन सा ऐसा गलत काम किया, कौन सा ऐसा अपराध किया कि आज ये करने की नौबत आ गयी। सही ढंग से हमलोगों ने विकास की बातें की, विकास का काम किया, बिहार को उंचाइयों तक ले जाने की बात की, नौजवानों को हमने जोड़ने का काम किया। हमलोग तो हमेशा नौजवानों के प्रति चिंतित रहे, पिछड़ा वर्ग, दलित, अत्यंत पिछड़ा वर्ग आपको तो पता है स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड । और थोड़ा समय दिया जाय महोदय, अभी तो बहुत है, अभी तो शुरूआत है- कई ऐसी-ऐसी चीजें हैं जो बोलनी हैं।

अध्यक्ष : थोड़ी सी समय सीमा देखनी पड़ती है।

श्री तेजस्वी प्रसाद यादव,नेता,विरोधी दल : आज थोड़ा हमलोगों का दिन होना चाहिए।

अध्यक्ष : ठीक है बोलिये।

श्री तेजस्वी प्रसाद यादव,ने0वि0द0 : महोदय, यह हम कहना चाहते हैं कि ये जितना ढकोसला हुआ ये केवल और केवल एक इन्डीविजुवल के छवि को लेकर के, उसको बनाने के चक्कर में हुआ और नरेन्द्र मोदी जी का भाषण तैयार करने के लिए कि वे बिहार किस मुंह से आयेंगे क्योंकि उन्होंने तो वादे पूरे नहीं किये और अमित शाह ने तो कह दिया था कि भाई वह जुमला था, हमलोग तो रोजगार के लिए बोलते थे कि दो करोड़ नौजवानों को रोजगार दो, 15-15 लाख रूपया हरेक के एकाउंट में दो, कालाधन लाओ- आप तो वहां से जाइये स्विस बैंक से लेकर आइये, याद दिलाते थे गंगा सफाई योजना की बात करते थे, मेक इन इंडिया का क्या हुआ वह बताइये। जितनी योजनाएं थी या नोटबंदी में कितने नोट छपे, कितने पुराने नोट जप्त हुए, कैसे उनको नष्ट किया गया कोई हिसाब नहीं, पहले तो एक-एक दिन पर रिपोर्ट आता था कि इतना जमा हो गया, इतना जमा हो गया, लेकिन दुनिया का पहला खजांची होगा आर0बी0आई0 जिसको यह नहीं पता कि कितने नोट छपे, कितने नोट रद्द किया गया, कितना उसपर खर्चा किया गया यह जवाब हम मांगते रहे, लेकिन बिहार किस मुंह से आते, हमलोग तो मांग कर रहे थे कि बिहार को स्पेशल स्टेटस दो, स्पेशल पैकेज दो, जो घोषणा आरा में आपलोगों ने बिहार की बोली लगाने का काम किया था, उस समय बिहार की बोली लगायी गयी, आज हो सकता है बी0जे0पी0 ने मुख्यमंत्री जी और जे0डी0यू0 का भी बोली लगा दिया हो। महोदय, अमित

शाह जी ने ये कहा ये ऑन रेकार्ड स्टेटमेंट है कि हिन्दुस्तान का कोई ऐसा राज्य नहीं रहेगा जहां बी0जे0पी0 का मुख्यमंत्री नहीं होगा । आज भले जदयू अपने एन0डी0ए0 गठबंधन में सबसे बड़ी पार्टी हो बिहार में लेकिन जदयू की जो विचारधारा है उससे विपरीत मुख्यमंत्री जी जदयू के नेता निकले । जदयू की ये लड़ाई थी कि पिछड़ों वर्गों के लिए, दलितों के लिए, अल्पसंख्यकों के लिए वे लड़ाई लड़ने का काम करेंगे, अंतिम पायदान पर जो व्यक्ति खड़ा है उसकी बात करने का काम करेंगे, लेकिन उनको ठगकर के आज ये लोग भाजपा के साथ चले गये । इससे साफ जाहिर होता है कि ये पिछड़े विरोधी हैं, दलित विरोधी हैं, अल्पसंख्यक विरोधी हैं। महोदय, बातें कई की गयी विशेष पैकेज तो आज तक मिला नहीं, चार साल अगर बर्बाद नहीं किया होता तो हो सकता है कि विशेष पैकेज भी मिल गया होता तो इसका जवाब कौन देगा, हो सकता है विशेष राज्य का दर्जा भी मिल गया होता, इसका जवाबदेह कौन है ? अफसर कन्फ्यूजन में रहते हैं कि किसकी सरकार आयेगी तो किसपर क्या कार्रवाई हो जायेगी, काम नहीं कर पाते हैं ठीक से- ऐसे भी अधिकारियों की इतनी कमी है सरकार में हमलोग खुद मंत्री रहकर के भोग चुके हैं। इंजीनियरों की कमी है, डाक्टरों की कमी है इसका जवाब कौन देगा तो इन सब चीजों पर हमलोगों को आगे भी करते रहना है, हमलोगों को तो मैदान में भी जाना है, जनता से बहुत सारी बातें करनी है, लेकिन यह बताइये महोदय कि लालू जी पर तो पहले से फॉडर केस चल रहा था, फॉडर स्कैम का वह तो पहले से टेन्टेट थे। तो क्या इनको पता नहीं था कि आर0जे0डी0 करप्ट पार्टी है या लालू जी पर जो आरोप लगे हैं वह करप्शन का लगा है ? तब क्यों ये आए ? जब इनका वजूद खतम हो गया था तब हमारे पास क्यों आए, तब हमारे साथ क्यों सरकार बनाने का काम किया। महोदय, चम्पारण सत्याग्रह गांधी जी का 100वॉं शताब्दी मनाने का काम किये, हमको लेकर गये मुख्यमंत्री जी- ऐसा नहीं है कि सारी चीजें हमे बुरी ही लगती हैं, ऐसा नहीं है, लेकिन अब वहां बैठ गये हैं, जिनके साथ बैठ गये हैं या हो सकता था कि जो असली चेहरा अंदर था वह उस समय बाहर नहीं था इसलिए हम भी कन्फ्यूज कर गये थे, अब सामने आ गया है, लेकिन यह बताइये कि बापू के हत्यारों के साथ जिन्होंने चम्पारण सत्याग्रह मनाने की बात की, गांधीवादियों को बुलाकर के यहां विज्ञान भवन में हमलोगों ने इतना बड़ा आयोजन किया उस समय मुख्यमंत्री जी क्या-क्या बातें आपने कही थी और आज क्या परिस्थिति बनी कि आज एक तरफ आप गांधी के हत्यारे के साथ गले मिलने का काम किये, आपकी दोहरी नीति है- यह कौन सी विचाराधारा है, कौन सा सिद्धांत है

(व्यवधान)

एक तरफ गोडसे, एक तरफ गांधी

(व्यवधान)

अध्यक्ष : शांति, माननीय सदस्य।

श्री तेजस्वी प्रसाद यादव,नेता,विरोधी दल : हम तो यह कहना चाहते हैं कि मुख्यमंत्री जी ने केवल और केवल गांधी जी का भी इस्तेमाल करने का काम किया है। उनको भी इस्तेमाल करने का काम किया है, कोई विचारधारा नहीं। महोदय, संघमुक्त भारत की बात...... बोलने दीजिए, पूरी बातों को रखने दीजिए आज........ऐ भाई वीरेन्द्र जी, ललित जी बैठिए। आपलोग मत बोलिये मुझे बोलने दीजिए। हम अकेले काफी हैं, आपलोग बैठे रहिये। सुनिए, संघमुक्त भारत किसने कहा, किसने इसका अभियान छेड़ने की बात की और हम तो मुख्यमंत्री जी से कंधे से कंधा मिलाकर के उनके साथ खड़े थे, उनके पीछे खड़े थे कि जो मुख्यमंत्री जी बात कर रहे थे संघमुक्त भारत की उसका साथ हमलोग पूरी तरीके से तैयार थे साथ देने के लिए, लड़ने के लिए लेकिन मुख्यमंत्री जी संघियों के आगे झुक गये, रणछोड़ हो गये और 28 साल का नौजवान नहीं डरा इन आर0एस0एस0 और भाजपाइयों से लेकिन मुख्यमंत्री जी इतने बड़े होने के बावजूद, कद्दावर होने के बावजूद डर गये.........क्रमशः।

टर्न-4/अशोक/28.07.17

श्री तेजस्वी प्रसाद यादव, नेता, विरोधी दल : (क्रमशः) मिट्टी में मिल जायेंगे लेकिन भाजपा में दुबारा नहीं जायेंगे, यह मेरा स्टेटमेंट है ? यह किनका स्टेटमेंट है ? मिट्टी में मिल जायेंगे, मिट्टी में मिल जायेंगे, लेकिन भाजपा में नहीं जायेंगे । कोई विश्वास करेगा अब नीतीश कुमार जी पर ? कोई विश्वास करेगा बिहार की जनता, देश की जनता? 'हे राम' से महोदय, 'हे राम' से 'जय श्रीराम' में पलटी मार गये । 'हे राम' महात्मा गांधी और 'जय श्री राम' गोड्से- कौन सी विचारधारा के साथ हैं महोदय आप, बताइये । रेजिगनेशन का ड्रामा हुआ, रेजिगनेशन का ड्रामा हुआ..

अध्यक्ष : तेजस्वी जी, इधर देख कर ।

श्री तेजस्वी प्रसाद यादव, नेता, विरोधी दल : रेजिगनेशन का ड्रामा हुआ, तुरत इन्होंने इस्तीफा दिया, नहीं देना चाहिये था, हमारे नेता लालू जी ने ये भी कहा था, प्रस्ताव भी दिया था कि भाई आप कोई तीसरा नेता चुन लीजिए, तीसरा नेता इसलिये चुन लीजिये, महागठबन्धन विधायक दल की बैठक बुलाकर क्योंकि नीतीश कुमार जी पर भी मुकदमा चल रहा है, 302 का मुकदमा चल रहा है, इन पर अटैम्प्ट टू मर्डर का, मर्डर का, आर्म्स एक्ट का, सारे मुकदमें चल रहे हैं, कोर्ट में है, लेकिन न्याय न्यायालय देगा, लेकिन आज तक हमने कभी भी एक्स्प्लानेशन देते हुये मुख्यमंत्री जी

को नहीं सुना, सुशील मोदी जी पर क्या आरोप नहीं है ? क्या एफ.आई.आर. नहीं है ? 120 का उन पर भी हैं, मेरे पर भी है, तब उनको उप-मुख्यमंत्री क्यों बनाया गया ? क्यों उप-मुख्यमंत्री का शपथ ये लिये ? और इतनी हड़बड़ाहट है, इतनी हड़बड़ाहट में, पांच बजे शपथ लेना था पांच बजे शपथ लेना था तो दस बजे क्यों किया गया ? और हम तो गवर्नर साहब से मिले, गर्वनर साहब से मिले, गर्वनर साहब को बताया कि संविधान के हिसाब से जो स्ट्रेंग्थ होता है महोदय वह सिंगल लार्जेस्ट पार्टी को देखकर के गर्वनर को बुलाना होता है महोदय, महामहिम राज्यपाल को बुलाना होता है महोदय, लेकिन ऐसा नहीं हुआ, हमलोग खुद चलकर गये, लेकिन हमें मौका कब दिया गया ? जब हमको जाना था गर्वनर हाऊस, पहले तो इस्तीफा देकर कर के आ गये, नरेन्द्र मोदी जी ने तुरत बधाई पांच मिनट के अन्दर ही दे दी ट्वीट करके, फिर बी.जेपी. ने बोला, ऑफर दिया कि भाई अब नीतीश जी तय करेंगे कि जाना है कि नहीं आना है एन.डी.ए. में, फिर थोड़ी देर के बाद मिल जाते हैं, समर्थन दे दिया जाता है, एन.डी.ए. का नेता चुन लिया जाता है, आते हैं थोड़ी देर में गर्वनर साहब बीमार हो जाते हैं अस्पताल चले जाते हैं, आते हैं अस्पताल तो मुख्यमंत्री जी पहुंच जाते है तो हमें मौका कब मिला ? ये तो देश की जनता और बिहार की जनता देख रही है, हमें दावा करने का मौका कहां मिला? फिर भी हमने गवर्नर साहब से मिलकर के बोला कि रिभ्यू कर लीजिये, जो सिंगल लारजेस्ट पार्टी आने के हिसाब से वह होगी । महागठबन्धन तो टूटा नहीं, महागठबन्धन तो टूटा नहीं कोई एक पार्टनर छोड़कर चला जाय मगर कांग्रेस और आर.जे.डी. तो इन्टैक्ट था और हमारे साथ कई ऐसे विधायक भी थे । डी.एन.ए. का गाली दिया गया महोदय, बड़ा-बड़ा कैम्पेन चलाया गया, लोगों ने लिखा बोर्ड पर लिखा, लिखा गया, पी.एम.ओ. भेजा गया, ये डी.एन.ए. का गाली देने वाले लोग आज कैसे, किस मुंह से भाजपा के साथ वापस चले गये, ये देश की जनता और बिहार की जनता जानना चाहती है महोदय । और आज नीतीश कुमार जी कहते हैं कि जीरो टॉलरेंस ऑन करप्शन होगा महोदय, जीरो टॉलरेंस ऑन करप्शन होगा, आज ये राज्य सरकार में भी हैं और केन्द्र में भी हैं महोदय, हम पूछना चाहते हैं कि क्या नीतीश कुमार जी कोई ऐसा कानून नरेन्द्र मोदी जी के साथ मिलकर के बनाना चाहेंगे कि कोई भी संवैधानिक पद पर बैठा हुआ व्यक्ति पर अगर एफ.आई. आर. होता है तो उनको उस पद पर रहने का कोई अधिकार नहीं है । तब मानेंगे कि आप भ्रष्टाचार के खिलाफ हैं ।

(व्यवधान)

छोड़िये न, लोग बोल रहे हैं ...

अध्यक्ष : तेजस्वी जी, नेता विरोधी दल ।

श्री तेजस्वी प्रसाद यादव, नेता विरोधी दल : महोदय, शराबबन्दी, शराबबन्दी, देखिये हमलोगों ने पूरा समर्थन दिया था, शुरू से ही नीतीश कुमार जी के साथ थे, हमने तो नीतीश कुमार जी को भी बोला था कि आप गुरू समान हैं । हमारे चाचा थे, चाचा हैं और आगे भी रहेंगे, हम व्यक्तिगत तौर पर इनका लगातार सम्मान करते रहेंगे, लेकिन राजनीतिक रूप से जिस तरह से सारी चीजें हुई जो इनकी रणनीति रही, इनका पॉलिटिक्स करने का जो तरीका रहा, इससे हम दु:खी हैं क्योंकि आज ये इनके साथ बैठे हुये हैं । हम यह जानना चाहते हैं कि शराबबन्दी का, पूर्ण शराबबन्दी का जो कानून बना था, भाजपा के लोग यहीं बैठे हुये थे, आप महोदय सब साक्षी हैं तालीबानी कानून, तालीबानी कानून,...

अध्यक्ष : तेजस्वी जी, इधर ।

श्री तेजस्वी प्रसाद यादव, नेता विरोधी दल : ठीक है । (व्यवधान)

अध्यक्ष : माननीय नेता विरोधी दल, आप को इधर देखना है । आप 'ना' पक्ष हैं ।

श्री तेजस्वी प्रसाद यादव, नेता विरोधी दल : ठीक है, अब आपको ही देख कर बोलेंगे । तालीबानी कानून का क्या होगा अब ? अब बिहार में शराबबन्दी तो हो गई है बी.जे.पी. तो विरोध में थी लेकिन मुख्यमंत्री जी ने तो प्रधान मंत्री जी से भी आग्रह किया जब यहां गुरूनानक जी की जब ये सारा इभेंट चल रहा था, गुरू गोविन्द सिंह जी की, तब प्रधानमंत्री जी आये थे तब मुख्यमंत्री जी ने साफ तौर पर कहा था कि प्रधान मंत्री जी को कि पूरे देश में आप लागू कीजिए लेकिन प्रधानमंत्री जी उस समय किस प्रकार से कटे यह सब को पता है । मुख्यमंत्री जी को भी पता है कि किस हिसाब से, लेकिन हम यह जानना चाहते हैं कि क्या अब मुख्यमंत्री जी पूरे देश में पूर्ण रूप से शराबन्दी करवायेंगे ? अगर नहीं करवा पायेंगे तो क्या इस्तीफा देंगे ? यह हमलोग जानना चाहते हैं । और समय सीमा बता दी जाय अब तो आप उधर भी हैं इधर भी है, पूरा देश आपका है, भगवाकरण करना है, तो अब तो क्यों नहीं करा रहे हैं आप? क्या आप की जो स्वीट डीलिंग हुई थी, क्या यह भी एक डील का पार्ट बना या नहीं बना ? मोदी जी से आपने बोला कि आप पूर्ण रूप से देश में शराबबन्दी कीजिये तब हम एन.डी.ए. में आते हैं अगर यह बात हुई होती तो भी अच्छा होता तब आपके पास एक अच्छा एक्सक्यूज होता लेकिन एक निर्दोष को बदनाम करके एक परिवार को बदनाम करके, फंसा करके जाना, यह कहां से उचित है? ये सारा कांसप्रेसी रचा गया, हम लोगों को दबाने के लिए एक्सक्यूज करने के लिए महोदय, महोदय और

अध्यक्ष : अब समय..

श्री तेजस्वी प्रसाद यादव, नेता विरोधी दल : पांच मिनट । पांच ही मिनट ।

अध्यक्ष : पांच मिनट । घड़ी हमने देख लिया, पांच मिनट ।

श्री तेजस्वी प्रसाद यादव, नेता विरोधी दल : ज्यादा नहीं । ज्यादा नहीं । न्याय के साथ विकास की बात, न्याय के साथ विकास की बात करने वाले आज पूरे बिहार के साथ इन्होंने अन्याय करने का काम किया और विनाश करने वालों के साथ इन्होंने समझौता करने का काम किया महोदय । यह न्याय के साथ विकास नहीं । महोदय, नीतीश जी ने कभी भी हमसे रिजाईन नहीं मांगा, एक बार ये बोल देते कि आप रिजाईन दे दीजिये तो शायद हमलोग सोचते, हमलोग सोचते, हमलोग हो सकता था अगर खुद बोलते लेकिन माहौल ऐसा झूठा बनाया गया प्रवक्ताओं का, हमको तो यही लगता था कि नीतीश कुमार जी नहीं चाहते हैं कि हम रिजाईन दें, हम को तो यही लगता था कि उन्होंने तो कभी बोला नहीं था, मिडिया में जो बातें चलती हैं मुख्यमंत्री जी तो कहते हैं कि उन बातों को ये गौर नहीं करते ऐसी चीजें वो सुनते नहीं हैं तो हमें तो पूरा लग रहा था कि ये नहीं चाहते हैं कि हम इस्तीफा दें, मांगा ही नहीं गया तो इस्तीफा देने या न देने की बात कहां से आ गई ? लेकिन इनको क्या दुविधा हुई कि भाई कौन सा ऐसा प्रेशर हमलोग डाल रहे थे या ऐसी कोई बात कर रहे थे कि भाई आप चले जाइये बी.जे.पी. में या महागठबन्धन छोड़ने की मजबूरी थी, ऐसी तो कोई बात ही नहीं थी महोदय । हम यह कहना चाहेंगे कि हम पर आरोप लगा, आर.जे.डी. पर आरोप लगा, लालू जी पर आरोप लगा कि तेजस्वी यादव के चक्कर में, पुत्र मोह के चक्कर में, लालू जी ने महागठबन्धन तोड़ा । हम तो कहना चाहते हैं कि पुत्र मोह का कोई चक्कर नहीं था, पुत्र मोह होता तो मुख्यमंत्री हमको बनाया जाता, नीतीश जी से हम मिलते भी नहीं, हमने साम्प्रदायिक शक्तियों को रोकने के लिए गठबन्धन किया था महोदय और पुत्र मोह से ज्यादा भाई मोह ज्यादा था महोदय, भाई मोह ज्यादा था कि हमारी सिंगल लार्जेस्ट पार्टी भी आई तो भी मुख्यमंत्री आपको हमलोगों ने बनाने का काम किया । महोदय...

अध्यक्ष : तेजस्वी जी, अब एक मिनट ।

श्री तेजस्वी प्रसाद यादव, नेता विरोधी दल : पांच मिनट भी नहीं हुआ महोदय, हम देख रहे हैं ।

अध्यक्ष : तीन मिनट चला गया ।

श्री तेजस्वी प्रसाद यादव, नेता, विरोधी दल : डेढ़ मिनट हुआ है महोदय, अभी साढ़े तीन मिनट और बोल लेने दीजिये । हम ज्यादा कुछ नहीं कहेंगे । सारी बातें मोटा-मोटी तौर पर आ ही गई हैं महोदय, लेकिन जो बी.जेपी. के लोग आर.एस.एस. के लोग और गौरक्षक लोग जो आज देश में सर्टिफिकेट लेकर घूमते फिर रहे हैं कि कौन नेशनलिस्ट है और कौन एन्टिनेशनलिस्ट हैं, आज मुख्यमंत्री जी पहले एन्टिनेशनलिस्ट थे बी.जे.पी. के लिए आज बी.जे.पी. में जाने के बाद वे नेशनलिस्ट हो गये हैं । ये अब तक बुरे थे मुख्यमंत्री जी मतलब जो भाजपा के खिलाफ बोलेगा? और जो सच्ची बात

बोलेगा वह एन्टी नेशनलिस्ट हो जाता था लेकिन अब नेशनलिस्ट हो गये हैं अब तो वह बात आयेगी नहीं, जो लिंचिग चल रहा है पूरे देश में, इसपर तो मुख्यमंत्री जी कुछ बोलेंगे नहीं । क्रमशः

टर्न-5/ज्योति
28-07-2017 क्रमशः

श्री तेजस्वी प्रसाद यादव, नेता विरोधी दल : और बी.जे.पी. ऐसे लोगों पर कितने आरोप लगे, कितने आपके ऐसे मुख्यमंत्री चाहे योगी आदित्य नाथ पर कितने संगीन मामले रहें, क्या मुख्यमंत्री जी उनको भी हटाने का काम करेंगें, रिक्वेस्ट करेंगे मोदी जी से ? केशव प्रसाद मौर्य का रिजिग्नेशन लेंगे ? वसुंधरा राजे का लेंगे, शिव राज चौहान का लेंगे या अनेकों ऐसे बी.जे.पी. में या हेडक्वार्टर में या यहॉ के कितने केन्द्रीय मंत्री गिरिराज के यहॉ ..

अध्यक्ष : बैठिये न खत्म कर रहे हैं ।

श्री तेजस्वी प्रसाद यादव, नेता विरोधी दल : गिरिराज सिंह के यहॉ से करोड़ों रुपये मिलते हैं घर से हमारे यहॉ तो कुछ नहीं मिला लेकिन गिरिराज सिंह के यहॉ से करोड़ों रुपये मिलते हैं तो क्या ...

(व्यवधान)

हम दो बात बोलकर के हम स्पष्ट करते हैं । केवल दो बातें । हम यह कहना चाहते हैं आप तमाम सारे विधाायकों से हम अपील करना चाहते हैं । सारे विधायकों से हम अपील करना चाहते हैं खास करके ज.द.यू. के विधायकों से हम अपील करना चाहते हैं कि जिन लोगों ने गरीब गुरबा ने, सामाजिक न्याय और धर्म निरपेक्षता और देश बचाने की बात की थी और बी.जे.पी. भगाने की बात की थी वैसे मैनडेट लिया उन लोगों ने, उन विधायकों ने आज उनके गरीब, पिछड़ों, दलितों और अल्पसंख्यकों के मैनडेट का आपलोग ख्याल करने का काम कीजिये, अपमान करने का काम मत कीजिये कोई डरने की जरुरत नहीं है किसी से, हमलोग आपके साथ खड़े हैं आप लोग अपनी विचारधारा से कोई कंप्रमाईज मत कीजिये । हम सदन को यह विश्वास दिलाना चाहते हैं बिहार को और देश को यह विश्वास दिलाना चाहते हैं महोदय, कि हम लोग सामाजिक न्याय और धर्मनिरपेक्षता के साथ जो हमको कमजोर करने की साजिश चल रही है हम लोग और मजबूत होकर मजबूती के साथ इस विचारधारा को कायम करने का काम करेंगे ।

अध्यक्ष : अब समाप्त करें ।

श्री तेजस्वी प्रसाद यादव, नेता विरोधी दल : और मैं इस विश्वास मत के खिलाफ हूॅ ।

अध्यक्ष : ठीक है, धन्यवाद । माननीय सदस्य श्री नंद किशोर यादव ।

श्री भाई वीरेन्द्र : विश्वास मत पर इधर से नेता विरोधी दल बोले हैं तो अब माननीय मुख्यमंत्री का भाषण होगा न ?

अध्यक्ष : क्या ?

श्री भाई वीरेन्द्र : नेता विरोधी दल बोल चुके हैं और अब माननीय मुख्यमंत्री का भाषण होगा न ?

अध्यक्ष : नहीं, सभी दल के लोग बोलते हैं , आप पुराने सदस्य हैं भाई वीरेन्द्र जी ।

श्री भाई वीरेन्द्र : ये गठबंधन में शामिल लोग हैं ।

अध्यक्ष : ललित जी बैठिये न । क्या कह रहे हैं ? एक आदमी बोलियेगा तब न सुनेंगे, दोनों बोल रहे हैं ।

श्री भाई वीरेन्द्र : दो प्राणी ही लिए हैं शपथ, एक मुख्यमंत्री और एक उप मुख्यमंत्री । दो दल कहाँ है ?

अध्यक्ष : मुख्यमंत्री, उप मुख्यमंत्री तो हमेशा इस सदन में रहे हैं । श्री नंद किशोर यादव ।

(व्यवधान)

दल की तरफ से कोई बोल रहे हैं नेता के बदले तो वो बोलेंगे न । बाकी दल के नेता बोलेंगे ।

(व्यवधान)

नहीं, हमने ये कहा था कि दल को और समय को भी देखना पड़ता है। आप देखिये आपको हमने 40-45 मिनट दिया है । ललित जी, सुनिये । दो घंटे के समय में आपको 45 मिनट समय दिया जा चुका है । आप सब लोग चाह रहे थे कि नेता प्रतिपक्ष आप सबलोगों के बदले समय दिया जाय, हमने दिया है । शेष सवा घंटा भी बाकी लोगों को नहीं देंगे ? श्री नंद किशोर यादव ।

(व्यवधान)

श्री नंद किशोर यादव : महोदय, मैं विश्वास मत के पक्ष में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूँ । महोदय, मैं बड़े गौर से नेता विरोधी दल का विचार सुन रहा था । मुझे बड़ा साफ दीख रहा था कि उनके पूरे भाषण में कुर्सी जाने का दर्द झलक रहा है, छलक रहा है । महोदय, स्वाभाविक है । जिस परिवार से वे आते हैं, उस परिवार को सत्ता का चस्का लगा हुआ है और सत्ता प्राप्त करने के बाद कौन कौन से काम करने हैं ये भी उनको मालूम है । इसका उनको अच्छा अनुभव है और बोलते बोलते ...

(व्यवधान)

अध्यक्ष : आप सब लोग आपस में बात करियेगा तो कैसे दूसरे की सुनियेगा ।

श्री नंद किशोर यादव : महोदय, अगर ये लोग शोर करते हैं तो मुझे आश्चर्य नहीं होता है । चूँकि मैंने 15 साल तक इनका चरित्र देखा है । हंगामा करके ये अपनी राजनीति करते रहे हैं बात क्या करेंगे ? महोदय, विधान सभा के बाहर बोलने की हिम्मत है तो बोलकर देखिये ।

(व्यवधान)

महोदय, माननीय नेता विरोधी दल ने अपनी बात कहते कहते एक अच्छी बात कह दी महोदय, सच कह दिया । मैं वहीं से अपनी बात प्रारम्भ करना चाहता हूँ । नेता विरोधी दल ने कहा कि बिहार का नौजवान दुखी है कि जो 28 साल की उम्र में जो व्यक्ति उप मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठा था वह हट गया बिहार का नौजवान दुखी है । आक्रोश भी है ये भी कह रहे हैं । महोदय, क्यों दुखी है बिहार का नौजवान ? क्यों आक्रोशित है बिहार का नौजवान चूँकि बिहार के नौजवान को लगा था कि यह 28 साल की उम्र का नौजवान, नेता विरोधी दल आप बने हैं, कम से कम आप तो टिप्पणी मत करिये सुनिये न, सीखिये अभी । वहाँ बैठ चुके हैं और यहाँ बैठ चुके हैं पहली बार विधायक बने हैं । सुन लीजिये पहले । पहली बार आए हैं आप सुन लीजिये । महोदय, नौजवान में गुस्सा है, आक्रोश है । 28 साल के नौजवान के काम को देखकर । महोदय, बिहार के नौजवान को लग रहा है कि बिहार का नौजवान परिश्रम करता है, मेहनत करता है । रोजी रोटी कमाता है तब जाकर के चार पैसे कमा कर लाता है परिवार का भरण पोषण करता है लेकिन एक नौजवान 28 साल की उम्र में जब वह निमूछिया था महोदय, तब करोड़ों करोड़ का मालिक कैसे बन गया, यह गुस्सा है, देश के नौजवानों में इसका आक्रोश है बिहार के नौजवानों में । महोदय, गुस्सा इस बात का है । महोदय, बिहार के नौजवानों को लगता था कि जो आर.जे.डी. की कार्य संस्कृति रही है, जो आर. जे.डी. का कल्चर रहा है ।

(व्यवधान)

अध्यक्ष : अब शांति बनाये रखिये । क्यों बोल रहे हैं ?

श्री नंदकिशोर यादव : अभी तो शुरु किए हैं । एक ही लाईन में इतना उछलोगे तो आगे कैसे काम चलेगा । महोदय, मैं कह रहा था । महोदय, नौजवानों को लग रहा था कि शायद नीतीश जी ने बढ़िया निर्णय लिया है और कह रहे थे वो कि मैं चाचा मानता हूँ । पुत्र मोह के कारण मैं नहीं उप मुख्यमंत्री बना । तेजस्वी जी, अगर पुत्र मोह नहीं होता, अब्दुल बारी सिद्दिकी उप मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठते, आप नहीं बैठते । ये पुत्र मोह है । ये भाई मोह नहीं है । भाई मोह होता तो अब्दुल बारी सिद्दिकी यहाँ बैठे हुए होते । महोदय, मैं कह रहा था आपसे मैं कह रहा था कि नौजवानों में आक्रोश है ।

श्री अब्दुल बारी सिद्दिकी : महोदय,..

अध्यक्ष : सिद्दिकी साहेब, अगर आपके नंद किशोर यादव जी मित्र हो सकते हैं लेकिन सदन की परिपाटी के मुताबिक आप दोनों आपस में अपने मन से बातचीत क्यों शुरु कर रहे हैं । अब आप अपनी बात कह लीजिये ।

श्री अब्दुल बारी सिद्दिकी : मैं नंद किशोर जी को बताना चाहता हूँ कि जब मैं मुख्यमंत्री बनूँगा तब आप उसमें रहेंगे ?

श्री नंद किशोर यादव : आप जानते हैं सिद्दिकी साहेब आप जब रहेंगे मेरे साथ तो मैं जरुर आपके साथ रहूँगा ।

अध्यक्ष : चलिए अब आप अपनी बात जारी रखिये ।

टर्न-6/28.7.2017/बिपिन

(व्यवधान)

श्री नन्दकिशोर यादवः (क्रमशः): महोदय, मैं कह रहा था, लोग प्रसन्न थे । जब नीतीश कुमार जी ने समझौता किया और तेजस्वी यादव उप मुख्यमंत्री बने, तो वास्तव में महोदय, नौजवानों में थोड़ी खुशी थी और खुशी इस बात की थी- चलो, नया लीडरशीप डेवलप कर रहा है । शायद आर.जे.डी. पुरानी संस्कृति से अलग जाने की कोशिश करेगा । फिर लोगों ने पंद्रह साल का शासन देखा है, पंद्रह साल इन लोगों के हाथ में सत्ता थी और आतंक देखा है, जुल्म देखा है और बाहर ही नहीं, विधान सभा में देखा है । ये दो लोग हैं । ललित जी को याद होगा क्या-क्या होता था विधान सभा के अंदर, महोदय । तो लोगों को लगता था शायद यह जो आर.जे.डी. की पुरानी संस्कृति है, शायद नीतीश जी को भी लगा होगा कि आर.जे.डी. थोड़ा सुधर रहा है, पुरानी संस्कृति को छोड़ रहा है तो विकास की बात करेगा, नई संस्कृति में चलेगा लेकिन .....

(व्यवधान)

शायद तेजस्वी जी को बनाया होगा, इसीलिए स्वीकार कर लिया होगा। लेकिन महोदय, नीतीश जी को शायद यह पता नहीं था कि जिसको बगल में बैठाकर उप मुख्यमंत्री के नाते वो काम कर रहे हैं, बिना मूंछ के ही करोड़ों-करोड़ का मालिक बन गया है । शायद उनको पता नहीं होगा । मैं जानता हूं, नीतीश कुमार को बड़े नजदीक से देखा है मैंने । बहुत दिन तक हमलोग साथ काम किए हैं महोदय । सत्ता में भी रहे, विपक्ष में भी रहे । यह जो संघर्ष किया है महोदय, दोनों मिलकर संघर्ष किया है । मैं जानता हूं उनके स्वभाव को । अगर पहला दिन पता होता कि इस प्रकार के अवैध रूप से इतनी बड़ी संपत्ति का मालिक है यह, तो कभी इनको बगल में बैठाने का काम नीतीश कुमार नहीं करते, मैं इस बात को जानता हूं । महोदय, क्या-क्या आरोप लगाए जा रहे हैं ? माननीय नेता विरोधी दल ने क्या-क्या बातें कही, मैं सबका विवरण दूंगा महोदय तो उतना समय शायद मेरे पास नहीं है । अभी मुख्यमंत्री जी और उप मुख्यमंत्री जी को बोलना होगा । लेकिन कहा गया है कि लोकतंत्र की हत्या हो गई । कहां है लोकतंत्र ? कहां थे आप उस समय जिस समय नीतीश जी हमसे अलग हुए थे? कांग्रेस के लोग बैठे हैं, सदानन्द बाबू बैठे हैं । कहां थे आप ? क्यों समर्थन किया? क्यों नहीं कहा कि मैंडेट दूसरा है ? एक बात मैं और आपको बताना चाहता हूं । मैं एक बात और बताना चाहता हूं आपको । नीतीश कुमार जी ने ....

(व्यवधान)

मैं बता रहा हूं आपको । नीतीश कुमार जी ने जब-जब इस्तीफा दिया...

(व्यवधान)

अध्यक्ष : आप बार-बार क्यों खड़े हो जाते हैं ? बोलिए नन्दकिशोर जी ।

(व्यवधान)

श्री नन्दकिशोर यादव: महोदय, नीतीश कुमार जी ने जब-जब इस्तीफा दिया, जब-जब इस्तीफा दिया महोदय, तो एक निश्चित सिद्धांत था, एक विचारधारा थी । हमसे भी अलग हुए, उसके कारण अलग हो गए और इनसे भी अलग हो गए तो उसके कारण हो गए महोदय । कारण केवल एक था । नीतीश कुमार अपने सिद्धांतों से समझौता करना नहीं जानता है, नीतीश कुमार भ्रष्टाचार को बर्दाश्त नहीं कर सकता है.....

(व्यवधान)

और यही कारण है महोदय । अब ये कह रहे हैं कि हमसे इस्तीफा नहीं मांगा। कह रहे हैं नीतीश जी ने हमसे इस्तीफा ही नहीं मांगा । सोचिए, बड़ा आश्चर्य होता है । क्या बोलते हैं विरोधी दल के नेता, मुझे समझ में नहीं आता है । अगर आपसे इस्तीफा नहीं मांगा तो आपके पिताजी ने क्यों बयान दिया कि तेजस्वी इस्तीफा नहीं देगा? क्यों आपके विधान मंडल के लोगों ने तय किया कि इस्तीफा नहीं देंगे ? बोलने की जरूरत क्या थी ?

(व्यवधान)

बैठिये । बैठ जाइए आप । महोदय, मैं समझता हूं बात को । लेकिन महोदय, मैं यही सुनना चाहता था आपसे । मैं कहना चाहता हूं महोदय, नीतीश जी ने उप मुख्यमंत्री बनाया था तेजस्वी यादव जी को लेकिन तेजस्वी यादव जी अपना निर्णय नहीं ले पाते थे । इनके निर्णय इनके सजायाफ्ता पिता जी लिया करते थे जो कहते थे कि इस्तीफा नहीं देगा । इनका कोई निर्णय नहीं, महोदय । आप कहते हैं गरीब की बात । कह रहे हैं गरीब दु:खी है, कह रहे हैं गुरबा दु:खी है, कह रहे हैं अति पिछड़ा दु:खी है। कौन दु:खी है ? कोई गरीब दु:खी नहीं है, कोई अति पिछड़ा दु:खी नहीं है, कोई यादव का बेटा दु:खी नहीं है, कोई गरीब का बेटा दु:खी नहीं है, कोई गरीब दु:खी नहीं है, चूंकि लोगों को लग रहा है, लोगों ने देखा है । आज लोग जानना चाहता है ....

(व्यवधान)

अध्यक्ष: ललित जी, बैठिए ।

श्री नन्दकिशोर यादव: महोदय, गरीब दु:खी क्यों नहीं है ? गरीब को लग रहा है कि यह जो चपरासी के क्वार्टर में आदमी रहता था, गरीब को लग रहा है कि जो गरीबों की बात करता था, गरीब को लग रहा है कि जो गरीब-गुरबा की राजनीति करने की बात करता था, महोदय, उसको आश्चर्य हो रहा है कि गरीबों का पैसा, दलितों का पैसा, गाय चराने

वाले का पैसा, दूध दुहने वाले का पैसा, उसके घर से पैसा निकाल कर हजारों-हजार करोड़ रूपया जिस परिवार ने बना लेने का काम किया, गरीब उससे दु:खी है....

(व्यवधान)

बात कर रहे हैं ! गरीब की बात करते हो आप ? बताओ कौन-सा काम किया आपने ? कौन-सा परिश्रम, कौन-सा रोजगार किया आपने ? क्यों आई इतनी संपत्ति आपके पास । आप कह रहे हैं कि झूठा आरोप लग रहा है । आरोपों के बारे में सुशील जी बैठे हैं, वही ज्यादा बढ़िया जवाब देंगे आपको । मैं उसके बारे में कुछ कहना नहीं चाहता हूं । लेकिन मैं जरूर उम्मीद करता था, मैंने, जब तेजस्वी यादव उप मुख्यमंत्री बने, पथ निर्माण मंत्री बने तो मैं उसके बारे में, पथ निर्माण के बारे में चर्चा आज नहीं करूंगा....

(व्यवधान)

बैठिये । सुनिये । महोदय मैं पथ निर्माण विभाग की चर्चा आज नहीं करूंगा। मुझे बहुत अवसर मिलेंगे महोदय लेकिन मैं एक बात जरूर कहना चाहता हूं, जब ये उप मुख्यमंत्री बने थे तो मैंने कहा था सदन में, आपको याद होगा महोदय, इसी सदन में मैंने कहा था कि मुझे बड़ी उम्मीद है आपसे । मैंने कहा था कि आप बेहतर करिए और मैंने कोशिश की थी कि इनके खिलाफ बयान नहीं दूं लेकिन मैं आज कह सकता हूं कि जो उम्मीद हमने पाली थी, एक नौजवान से जो उम्मीद हमने पाली थी, वे बेहतर काम करेंगे । उस नौजवान ने अपने आसपास के भीड़ से बाहर निकलने का काम नहीं किया, परिवार की कार्य-संस्कृति से बाहर निकलने का काम नहीं किया और जो चरित्र रहा है, आर.जे.डी का जो चरित्र रहा है, भ्रष्टाचार का चरित्र, विकास विरोधी चरित्र, उस चरित्र से बाहर तेजस्वी यादव नहीं निकल पाए महोदय और इसीलिए मैं धन्यवाद देना चाहता हूं बिहार ....

अध्यक्ष : अब समाप्त करें नन्दकिशोर जी ।

श्री नन्दकिशोर यादव: महोदय, आप जानते हैं मेरा भाषण बिना एक कविता के पूरा नहीं हो सकता है । दो लाइन आप सुन लीजिए ।

अध्यक्ष : ठीक है ।

(व्यवधान)

श्री नन्दकिशोर यादव: शक्ति जी बैठ जाइए ।

अध्यक्ष : चन्द्रसेन जी, शांत रहिए । शक्ति जी, आप अपनी शक्ति का क्षय क्यों कर रहे हैं ?

(व्यवधान)

श्री नन्दकिशोर यादव: महोदय, मुख्यमंत्री जी भले हमसे अलग हो गए थे, लेकिन लोग जानते हैं, हम जब वहां भी बैठा करते थे तो महोदय, हम जो मुख्यमंत्री जी के बारे में कहा करते

थे उस समय, आज भी वही कहते हैं । अन्तर नहीं था महोदय । ये लोग एक नई विधा जानते हैं - जादू-टोना जानते हैं महोदय और मैं ....

(व्यवधान)

बैठो यार, बैठिये न । महोदय, सत्ता जाने का जो दर्द है वह बार-बार छलक जाता है । महोदय, ...

(व्यवधान)

अध्यक्ष : भाई वीरेन्द्र जी ....

श्री नन्दकिशोर यादव: महोदय, इन लोगों का दर्द छलकता है महोदय । स्वाभाविक है । मुझे बुरा नहीं लगता है । सब तो मेरे भाई हैं । आज वहां हैं, कल मेरे पास आने वाले हैं । मैं जानता हूं महोदय ।

अध्यक्ष : नन्दकिशोर जी, उनका कुछ कहना आपको भले बुरा नहीं लगता हो लेकिन सदन में तो एक व्यवस्था होनी चाहिए न !

श्री नन्दकिशोर यादव: वह होनी चाहिए महोदय । चूंकि सब मेरे भाई हैं, इनमें से बहुत सारे लोगों ने टिकट के लिए मुझे एप्रोच किया है । मैं जानता हूं । अगले बार मेरे ही टिकट पर लड़ने वाले हैं । मैं इनका बुरा नहीं मानता हूं । महोदय, मैं कहा था ....

(व्यवधान)

महोदय, मैं कह रहा था आपसे, महोदय मैं कह रहा था, नीतीश जी के बारे में मैं कहना चाहता हूं महोदय । महोदय .....

(व्यवधान)

ललित जी, आज आपका भेद खोल दें ? 2015 के चुनाव में मेरे यहां टिकट मांगने आए थे आप । क्यों ऐसा बोलते हैं ? बैठिए ।

(व्यवधान)

अध्यक्ष : ललित जी, सुनिए न आप ! आप मेरी बात सुनिए न !

भाई वीरेन्द्र जी । ललित जी । भाई वीरेन्द्र जी के साथ सदन के सभी माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि सबसे पहली बात तो है कि अनावश्यक टोका-टोकी न करें । दूसरी बात, अगर आपको कुछ कहनी है तो कम-से-कम आसन की इज्जत करिए । आसन की बात, मेरी बात भी पूरे तरीके से नहीं सुनना चाहते हैं ? कम-से-कम आसन की तरफ मुखातिब होकर बोलिए । आप दोनों एक दूसरे को देख कर बात करने लगते हैं । उससे अनावश्यक उत्तेजना बढ़ती है । इसलिए सबसे पहले, मैं बार-बार कह रहा हूं । नेता प्रतिपक्ष भी बोल रहे थे । उस समय हमने सारे सदस्यों को कहा था कि शांति से एक दूसरे की बात सुननी चाहिए । यह सदन विमर्श का सदन है, उसकी सार्थकता यही है जब एक दूसरे की बात शांति से सुनिए । सबको अवसर है ।

अभी आपके नेता को अवसर था । उन्होंने सारी बात रखी है और फिर आपका जब अवसर आएगा तब कहियेगा । अभी तो शुरूआत है । चलिए ।

टर्न-07/कृष्ण/28.07.2017

श्री ललित कुमार यादव : अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य श्री नन्द किशोर जी ने मेरा नाम लिया है । हमको एक मिनट चाहिए ।

(व्यवधान)

महोदय, आप बिहार विधान सभा की प्रक्रिया एवं कार्य संचालन नियमावली के तहत सदन चलाते हैं, हमलोग कभी भी बिहार विधान सभा की प्रक्रिया एवं कार्य संचालन नियमावली के तहत सदन को चलाने में बाधक नहीं बने । लेकिन माननीय सदस्य श्री नन्द किशोर यादव जी ने मेरे बारे में कहा है, मेरी बात भी सुन लीजिये ।

अध्यक्ष : आप तो बोलते नहीं हैं जल्दी ।

श्री ललित कुमार यादव : माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य श्री नन्द किशोर जी बोले कि हमारे यहां टिकट के लिये आये थे । मैं कहना चाहता हूं कि अगर हम नन्द किशोर जी के घर का दरवाजा भी देखे होंगे तो मैं विधान सभा की सदस्यता से इस्तीफा दे दूंगा । मैं नन्द किशोर जी को चुनौती देता हूं ।

(व्यवधान जारी)

श्री नन्द किशोर यादव : बैठ जाईये । बैठ जाईये ।

अध्यक्ष : माननीय श्री नन्द किशोर जी, आप ने तो यहां पर नहीं कहा कि ये टिकट के लिये आये थे । आप ने यह तो सदन में नहीं कहा ?

श्री नन्द किशोर यादव : नहीं नहीं । महोदय, मैं कह रहा हूं । ललित जी, बैठ जाईये ।

(व्यवधान जारी)

अध्यक्ष : बिल्कुल आप पूरी तरह से संरक्षित हैं । आप बिल्कुल संरक्षित हैं । आपकी सुरक्षा, संरक्षा पर कोई ऊंगली नहीं उठा सकता है । अब आप इनको बोलने दीजिये । बोलिये ।

श्री नन्द किशोर यादव : बैठिये ।

अध्यक्ष : नन्द किशोर जी, आप इधर देख कर बोलिये ।

श्री नन्दकिशोर यादव : महोदय, ललित जी को बुरा लगता है । मैं फिर कहना चाहता हूं बड़ी जिम्मेवारी के साथ, पार्टी के बड़े नेता होने के कारण कि 2020 में अगर आयेंगे तो मैं इनको भाजपा का टिकट दूंगा महोदय । चिन्ता नहीं कीजिये आप । मैं दूंगा आपको टिकट ।

अध्यक्ष : यह कोई टिकट बांटने की जगह तो है नहीं ।

(व्यवधान)

नन्द किशोर जी, आप अपनी बात पूरा कीजिये । अब आप दो मिनट में पूरा कीजिये ।

श्री नन्द किशोर यादव : बैठिये । बैठिये ललित जी । बैठिये भाई ।

अध्यक्ष : अब समाप्त कीजिये ।

श्री नन्द किशोर यादव : महोदय, मैं कह रहा था कि नीतीश जी के बारे में, जो विचार हमारे पहले थे, महोदय, आज भी वही विचार हैं । महोदय, आपको याद होगा, जब हम वहां बैठा करते थे तो वहां भी बैठने के बाद नीतीश जी के बारे में मेरे मन में जो छवि थी उसका जिक्र मैं बार-बार करता था और आज भी मैं उस बात को दुहराना चाहता हूं -

कभी टूटा नहीं मेरे दिल से तेरी यादों का रिश्ता,
कभी टूटा नहीं मेरे दिल से तेरी यादों का रिश्ता
गुफ्तगू किसी से भी हो, ख्याल तेरा ही रहता है ।

महोदय, वही संबंध कायम है । आज भी वही संबंध कायम है । महोदय, मैं जानता हूं । महोदय, मैं इसलिये संबंध रखता हूं कि नीतीश कुमार जी ने एक निश्चित विचार के साथ अपने को बांध कर के रखा । नीतीश कुमार जी ने जीरो टॉलरेंस के आधार पर इस्तीफा देने की जब भी नौबत आई, इस्तीफा देने में हिचक नहीं किया महोदय । मैं इसलिए सम्मान करता हूं महोदय । मैं नीतीश कुमार जी का इसलिए सम्मान करता हूं महोदय कि डेवलपमेट के नाम पर नीतीश कुमार जी ने कभी समझौता नहीं किया । हां, मुझे दुख जरूर है । हां, मैंने कहा । नीतीश कुमार जी बीच-बीच में कभी-कभी मिल जाते थे तो मैंने इनको कहा कि डेढ़ साल से कैसे इनलोगों को झेल रहे हैं, जिनलोगों ने बिहार की सड़कों को गड्ढ़े में तबदील करने का काम किया था। महोदय, मैं इसीलिये नेता, विरोधी दल को कहना चाहता हूं कि थोड़ा और सीखिये, थोड़ा और समझिये । चीजों के बारे में आत्मचिन्तन कीजिये, आत्ममंथन कीजिये । कह रहे हैं आत्मा की आवाज । मैंने बयान पढ़ा है महोदय । अंतरात्मा की आवाज पर वोट करें । क्यों करेंगे ? भ्रष्टाचार के कारण जिसकी आत्मा मर गयी है, उसके कहने पर अंतरात्मा की आवाज पर कोई वोट क्यों करेगा ? यह सवाल खड़ा है महोदय । महोदय, मैं पूरे सदन से कहना चाहता हूं कि फिर से एक बार नई सरकार बनी है और यह सरकार विकास के प्रति समर्पित है । बिहार के लिये समर्पित है और एक अच्छा संयोग बना है, बिहार में और केन्द्र में पहली बार एक गठबंधन की सरकार बनी है । महोदय, बिहार तेजी से विकास करेगा । नीतीश कुमार जी और सुशील कुमार मोदी जी के नेतृत्व में हम आगे बढेंगे, इस भरोसे के साथ मैं इस विश्वास मत का समर्थन करता हूं ।

बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री तेजस्वी प्रसाद यादव, नेता, विरोधी दल : महोदय, एक मिनट । अभी माननीय सदस्य कविता सुना रहे थे । हम उनको एक कविता याद दिलाना चाहेंगे । नीतीश जी ने कविता कह कर नरेन्द्र मोदी जी को सुनाया था,

''बहती सी हवा सा था वो, दाउद को लानेवाला था''

आज नीतीश जी के उस कविता का क्या होगा ? हम उनसे पूछना चाहते हैं । दूसरा, आपलोगों की जो सरकार है, नई सरकार जो बनी है तो नई सरकार कितने दिनों तक के लिये बनी है, नीतीश जी को बता दीजिये, हमको चिन्ता है नीतीश जी की ।

महोदय, हमारी पार्टी की तरफ से माननीय सदस्य श्री अब्दुल बारी सिद्दीकी जी को बोलने का मौका मिलना चाहिए ।

अध्यक्ष : माननीय सदस्य, श्री सदानन्द सिंह ।

श्री सदानन्द सिंह : अध्यक्ष महोदय, आज बिहार विधान सभा में माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी द्वारा विश्वास का प्रस्ताव रखा गया है, हम उसके विरोध में खड़े हैं, हम उस विश्वास प्रस्ताव के खिलाफत की बात करना चाहते हैं । बड़ा दुख होता है अध्यक्ष महोदय, हम नन्द किशाोर जी के भाषण को सुन रहे थे । नन्द किशोर जी अच्छे वक्ता हैं लेकिन 20 महीने पहले और 20 महीने तक लगातार विपक्ष में बैठ कर नन्द किशोर जी ने जो बातें कही थी, अचानक आज ये यू टर्न में चले गये । क्या है, कहां क्या बोलते थे और कहां आज किस तरह से बोल रहे हैं ? अध्यक्ष महोदय, हमको दुख इसलिए होता है कि आदरणीय नीतीश कुमार जी से बड़ी अपेक्षायें थी और मेरी अपेक्षा कुछ अधिक थी । मैं इन्हें एक अच्छे मुख्यमंत्री के रूप में मानता रहा हूं । लेकिन नीतीश कुमार जी इस तरह से इस महागठबंधन से निकल जायेंगे, यह कभी विश्वास नहीं होता था । कभी सोच भी नहीं सकते थे कि जिस महागठबंधन को बनाकर देश में भाजपा की शक्ति को बिहार की धरती पर रोकने का काम नीतीश कुमार जी और महागठबंधन के लोगों ने किया था उसका अब क्या होगा ? वह कहां है, किस स्थिति में है ?

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, मैं यह कह रहा था कि जिस भाजपा ने नीतीश कुमार जी के डी0एन0ए0 में फर्क करने की बात की थी, कितने गंदे शब्दों का प्रयोग किया था ? कितना वह द्;खद था ? यदि उस बात को याद कीजिये, उससे भी भद्दी गाली कोई हो सकती है क्या ? नीतीश कुमार जी, किसकी गोद में चले गये आप ? उनलोगों की गोद में, जिसकी खिलाफत करते थे, धर्मनिरपेक्ष, समाजवाद जो जुनून आप में सवार था और जो शुरूआती दौर से आप समाजवादी रहे, भाजपा की गोद में चले गये ? बड़ा दुख होता है । शासन अच्छा चल रहा था । पिछले 20 महीनों में कहीं कोई परेशानी नजर नहीं आ रही थी ।

क्रमश :

टर्न-8/राजेश/28.07.17

श्री सदानंद सिंह, क्रमश: अचानक यह बात तो हुई नहीं, किस तरह से सुनियोजित ढंग से यह बातें हो रही थीं, राष्ट्रपति जी का चुनाव, बिहार के राज्यपाल के पक्ष में मतदान करने की बात हो, चाहे मॉरिशस के प्रधानमंत्री जी के साथ, वर्तमान भारत सरकार के प्रधानमंत्री जी के साथ भोज करना, फिर मुख्यमंत्री जी का अन्य ढंग से प्रधानमंत्री जी से मिलना, यह सब बाते लग रही थी कि कहीं न कहीं यह सुनियोजित ढंग से चल रहा है और अगर यह सुनियोजित ढंग से नहीं चलता, तो 5.00 बजे शाम में माननीय मुख्यमंत्री जी त्यागपत्र देने जाते हैं, 10 मिनट के अंदर प्रधानमंत्री जी का फोन आता है बधाई का, 15 मिनट के अंदर हमारे सम्मानीय उप-मुख्यमंत्री जी बोलते हैं कि हमलोग समर्थन देने जा रहे हैं............ (व्यवधान)

श्री नंदकिशोर यादव: यह संवेदनशीलता है ।

श्री सदानंद सिंह: हॉ-हॉ, बड़ी संवेदनशीलता है, अरे भाई बैठिये न और 15 मिनट के अंदर .....

(व्यवधान)

अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, बीच में टोका-टोकी न करें ।

श्री सदानंद सिंह: महोदय, और 15 मिनट के अंदर भाजपा का लिखित समर्थन चला जाता है और फिर भाजपा के लोग माननीय मुख्यमंत्री जी के आवास पर आते हैं, मैं उस सीन को भी देख रहा था, एक टेलीविजन वाला पूछता है सुशील मोदी जी से, कि क्या मैं भावी उप-मुख्यमंत्री जी से बातें कर रहा हूँ, तो मोदी जी हॅसते हुए चले जाते हैं, यह किस बात को संकेत कर रहा है कि यह सारी बातें व्यवस्थित थीं और फिर माननीय मुख्यमंत्री जी के यहॉ भोजन और फिर सरकार का गठन, नीतीश बाबू आप चले गये, उन लोगों के गोद में चले गये, जिन्होंने आपके डी0एन0ए0 में दोष कहा था............

(व्यवधान)

अध्यक्ष: आप हम ही को देखिये न ।

श्री सदानंद सिंह: आपको तो देख ही रहे हैं हुजूर, काफी दिनों से देख रहे हैं ।

अध्यक्ष: आप इधर देखिये न, उधर देखते हैं, इसलिए टोक देते हैं ।

श्री सदानंद सिंह: महोदय, अब क्या होगा उन दलितों का, उन पिछड़ों का, उन अल्पसंख्यकों का, जिन लोगों ने नीतीश कुमार जी को, महागठबंधन के नाम पर समर्थन दिया था और दो तिहाई की अधिक संख्या में बिहार में महागठबंधन जीत कर आया था, उसको क्या जवाब देंगे ? मैं नहीं कहना चाहता लेकिन मैं यह अवश्य कहना चाहता हूॅ कि नीतीश कुमार जी आप बोलते थे कि मर जायेंगे, मिट जायेंगे, लेकिन भाजपा के साथ नहीं जायेंगे, उस बात का क्या हो रहा है, इसलिए बहुत बातों के छिद्रान्वेषण में नहीं जाना

चाहता हूँ, चलिये, आपको मुबारक हो लेकिन मुझे शक लगता है कि आप यह लंबी लड़ाई, लंबे समय तक, नहीं चला पायेंगे और फिर हमको लगता है कि नंदकिशोर जी और मोदी जी इस तरफ आयेंगे और नीतीश कुमार जी को फिर से धर्मनिरपेक्षता के अलावे कोई दूसरा सहारा नहीं होगा, इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात को समाप्त करता हूँ ।

अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, यह दो घंटे का डिबेट है और आज जुम्मा का दिन भी है, इसलिए अगर आपलोगों की इजाजत हो तो हमलोग 1.00 बजे तक, क्योंकि सवा एक बजे जुम्मा होता है, इसको कनक्लुड कर दें ।

श्री अब्दुल गफूर: महोदय, जुम्मे का अजान 12.30 बजे होता है...........

(व्यवधान)

अध्यक्ष: इसलिए न कह रहे हैं कि 1.00 बजे तक समाप्त हो जायेगा ।

श्री अब्दुल गफूर: आप 12.30 बजे तक खत्म कराइये । जो अधिकार है नमाजियों का उसका हनन नहीं कीजिये ।

श्री मो0 इलियास हुसैन: आप 12.45 बजे तक चला सकते हैं ।

अध्यक्ष: पौने एक बजे तक तभी हो सकता है, जब आप सभी लोग छोड़ दीजिये, सरकार की तरफ से आधा घंटा बच रहा है, वे बोलेंगे । माननीय उप-मुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी जी । आप 10 मिनट बोलिये और 20 मिनट माननीय मुख्यमंत्री जी बोलेंगे ।

श्री सत्यदेव राम: महोदय, भाकपा माले कहाँ गया ?

(व्यवधान)

अध्यक्ष: आप ही लोग न कह रहे हैं । आप दो मिनट में अपनी बात को कहिये । वे समय के अंदर बोल रहे हैं । 15 मिनट में भाई वीरेन्द्र जी, दो-तीन से मतलब नहीं है, वे अपनी समय-सीमा के अंदर बोल रहे थे..........

(व्यवधान)

अगर 10 मिनट में कोई तीन मेम्बर बोलते हैं तो बोलेंगे, यहाँ आदमी की सीमा नहीं है, बल्कि समय की सीमा है । आप दो मिनट में महबूब जी, अपनी बात को समाप्त कीजिये ।

पौने एक बजे तक खत्म हो जायेगा न । पौने एक बजे तक में निस्तारण हो जायेगा ।

श्री अब्दुल बारी सिद्दिकी: महोदय, आप 2.00 बजे से फिर शुरु कीजिये ।

अध्यक्ष: फिर दोबारा बैठना न पड़ेगा । सब लोग तैयार हैं तो इसमें क्या दिक्कत है ? पौने एक बजे तक समाप्त हो जायेगा । अब यह समय भी जाया जा रहा है । पौने एक बजे तक तय हो गया कि समाप्त हो जायेगा । माननीय सदस्य महबूब जी, आप दो मिनट में अपनी बात को समाप्त करिये ।

श्री महबूब आलम: महोदय, बहुत-बहुत शुक्रिया । नीतीश जी ने जो बिहार के जनादेश के साथ

(व्यवधान)

जो विश्वासघात किया है महोदय, उसका विश्वास मात्र इस सदन में नहीं बल्कि जनता के बीच में फैसला होना चाहिए । महोदय, माननीय मुख्यमंत्री का जो तर्क है कि जीरो टोलरेंस भ्रष्टाचार पर, इससे पहले भी भाजपा के साथ उनकी सरकार थी, ए0सी0,डी0सी0 बिल 11,000 हजार करोड़ के घोटाले और अभी वर्तमान में इनका टॉपर घोटाला, बी0एस0एस0सी0 घोटाला ....

(व्यवधान)

अध्यक्ष: अब हो गया ।

श्री महबूब आलम: और मुसलमानों का कत्लेआम इन तमाम सवालों पर महोदय, इन भाजपा के साम्प्रदायिक फासीवादी मनसूबों को रहनुमायी करने के लिए बिहार की जनता ने जो मत दिया था...........

(व्यवधान)

अध्यक्ष: अब हो गया, आप बैठ जाइये । माननीय उप-मुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी जी ।

श्री सुशील कुमार मोदी, उप-मुख्यमंत्री: माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं चार वर्षों के बाद विधान सभा में खड़े होकर बोल रहा हूँ । माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं राष्ट्रीय जनता दल को धन्यवाद देना चाहूंगा कि आपने चार वर्षों के बाद मुझे विधान सभा में इस कुर्सी पर बैठकर बोलने का मौका दिया है, अगर आपने इस्तिफा दे दिया होता, आपने अगर सफाई दे दिया होता, तो मुझे इस कुर्सी तक आने का मौका नहीं मिलता, क्योंकि महोदय ये कह रहे हैं कि यह जनादेश का अपमान है । अध्यक्ष महोदय, बार-बार यह कहा जा रहा है कि यह जनादेश का अपमान है । अध्यक्ष महोदय, मैं यह जानना चाहता हूँ कि जनादेश क्या था ? क्या जनादेश केवल तीन दलों को मिल कर पॉच साल सरकार चलाने का जनादेश था या जनादेश था सुशासन के लिए, जनादेश था भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए, जनादेश था अपराध पर नियंत्रण के लिए, क्योंकि महोदय जनादेश मिला था इन सभी कामों के लिए ।

क्रमशः

टर्न-9/सत्येन्द्र/28-7-17

श्री सुशील कुमार मोदी,उप मुख्यमंत्री(क्रमशः): अध्यक्ष महोदय, ये जनादेश पांच साल तक भ्रष्टाचार के साथ समझौता कर और किसी तरह से पांच साल सरकार चलाने के लिए ये जनादेश नहीं था अध्यक्ष महोदय और इन लोगों के कारण अध्यक्ष महोदय, राष्ट्रीय जनता दल के अन्दर मो0 शहाबुद्दीन जैसे लोग..

(व्यवधान)

अध्यक्ष: महबूब जी, क्या कह रहे हैं बेमतलब का ? आपको समय दे दिया गया और आप बोले चले जा रहे हैं ? आप बैठिये ।

श्री सुशील कुमार मोदी,उप मुख्यमंत्री: अध्यक्ष महोदय, जो जनादेश था, वह जनादेश था इन बातों के लिए, केवल सरकार चलाने के लिए जनादेश नहीं था लेकिन आपके कारण मो0 शहाबुद्दीन जैसा अपराधी, आपने पार्टी से उसको निलंबित तक नहीं किया, अपनी पार्टी के राष्ट्रीय कार्यकारिणी में आपने बनाकर रखा । अध्यक्ष महोदय, क्या जनादेश इस काम के लिए मिला था । अध्यक्ष महोदय, राजबल्लभ यादव जैसा बलात्कार का जिस पर आरोप लगा हो, वह दो-दो घंटे और पूर्व मुख्यमंत्री से बैठकर बात करता है, क्या जनादेश इसलिए मिला था कि राजबल्लभ यादव जैसे लोग और सुप्रीमो से बैठकर दो घंटे बात करेंगे । अध्यक्ष महोदय, जनादेश इस काम के लिए नहीं मिला था । जनादेश मिला था एक स्वच्छ पारदर्शी सरकार के लिए और अध्यक्ष महोदय, डॉ0 लोहिया ने कहा था कि जिन्दा कौम पांच साल इंतजार नहीं करती हैं अध्यक्ष महोदय, बैठे हैं यहां सिद्दिकी साहब और सारे लोग, डॉ0 लोहिया जी ने कहा कि जिन्दा कौम पांच साल तक इंतजार नहीं करती है और जब मुख्यमंत्री को लगा कि इनलोगों के साथ रहकर भ्रष्टाचार पर अंकुश नहीं लगाया जा सकता है, इन लोगों के साथ रहकर शहाबुद्दीन जैसे लोगों पर अंकुश लगाने में कठिनाई हो रही है और इसीलिए अध्यक्ष महोदय और जो लोग कह रहे हैं मैं उनलोगों को बता देना चाहता हूं, एक जमाने में आपके 167 विधायक हुआ करते थे और 2010 में जब चुनाव लड़े आप तो आपकी संख्या घटकर 22 पर पहुंच गयी थी, टू टू बाईस और आप 22 पर पहुंच गये थे आप, आप अर्श से फर्श पर पहुंच गये थे और अध्यक्ष महोदय इसलिए जनादेश बेनामी सम्पत्ति को बचाने के लिए जनादेश नहीं था । छल प्रपंच और लोभ के लिए जनादेश नहीं था और माननीय मुख्यमंत्री को मैं धन्यवाद देना चाहूंगा कि इन्होंने तय किया कि वे भ्रष्टाचार से समझौता नहीं करेंगे और अध्यक्ष महोदय, बेनामी सम्पत्ति है कि नहीं, आप 26 साल के उम्र में आप 26 सम्पत्ति के मालिक बन गये अध्यक्ष महोदय.....

(व्यवधान)

अध्यक्ष: शांत रहिये, शांत रहिये।

श्री सुशील कुमार मोदी,उप मुख्यमंत्री: तो जनादेश इसलिए नहीं मिला था अध्यक्ष महोदय कि आप लाखों करोड़ों की सम्पत्ति के मालिक बन बैठें । आपसे मैं यह भी कहना चाहूंगा अध्यक्ष महोदय, इसलिए मैं मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देना चाहता हूँ कि इन्होंने घुटना नहीं टेका, इन्होंने भ्रष्टाचार से समझौता नहीं किया और गठबंधन तोड़कर इन्होंने भाजपा के साथ मिलकर सरकार चलाने का फैसला किया । अध्यक्ष महोदय, और इसीलिए मैं विश्वास मत के पक्ष में अपना समर्थन व्यक्त करता हूँ और इन्हीं शब्दों के साथ कि

हमलोग मिलकर बिहार का विकास करेंगे और बिहार को विकास की ऊंचाईयों तक ले जायेंगे । इन्हीं शब्दों के साथ मैं विश्वास मत के पक्ष में अपना समर्थन व्यक्त करता हूँ।

अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण । माननीय मुख्यमंत्री ।

श्री तेजस्वी प्रसाद यादव,नेता प्रतिपक्ष: अध्यक्ष महोदय...

(व्यवधान)

अध्यक्ष: माननीय सुशील मोदी जी के भाषण में अगर कोई असंसदीय बात होगी तो वह निकाल दी जायेगी।

(व्यवधान)

बोल दिये न, हम देख लेंगे उस मामले को ।

(व्यवधान)

श्री अब्दुल बारी सिद्दिकी: अध्यक्ष महोदय...

अध्यक्ष: 45 मिनट बोले हैं न, हम तो सब पार्टी को 10-15 मिनट दे रहे हैं, आपकी पार्टी को 45 मिनट दिये हैं ।

श्री नीतीश कुमार,मुख्यमंत्री: अध्यक्ष महोदय, मैं सदन से यही आग्रह करने के लिए खड़ा हुआ हूँ कि जो विश्वास मत का प्रस्ताव हमने रखा है, सदन से यही आग्रह होगा कि उसकी स्वीकृति प्रदान की जाय और जहां तक जो विषय उठाये गये हैं कई तरह के विषय अध्यक्ष महोदय, आज शुक्रवार का दिन है और आपने यह कह दिया इसलिए हम नहीं चाहते हैं कि जो मर्यादा है उसका तनिक भी उल्लंघन हो । मैं एक-एक बात का जवाब दूंगा और समय पर जवाब दूंगा । ये लोग अहंकार में जीने वाले हैं, भ्रम पालते हैं । ऐसा लगा कि महागठबंधन यानी किसका चेहरा और एक पार्टी के अस्तित्व को नकार रहे हैं और हमको जो मैनडेट मिला, बिहार की जनता ने जो मैनडेट दिया है वह काम करने के दिया है, जनता की सेवा करने के लिए दिया था, पारदर्शिता के लिए दिया था । हमने पूरा प्रयास किया, एक तिहाई समय हमने चलाया । कई प्रकार की कठिनाईयां आयीं लेकिन हमने गठबंधन धर्म का पालन करते हुए हर तरह की समस्या को दूर करने की कोशिश की और गठबंधन धर्म के विपरीत एक पार्टी के द्वारा न जाने कितने वक्तव्य दिये गये, मैंने सबको झेला है और ये कांग्रेस पार्टी के लोग बैठे हुए हैं, इनको 15-20 से ज्यादा नहीं मिलने वाला था, 40 तक पहुंचाने वाले हम ही हैं और इसके बाद हमने उनलोगों को भी कहा कि आप बीच में हस्तक्षेप करिये और रास्ता निकालिये । चूंकि जो स्थिति है, जो जनता का वोट मिला है वह काम करने के लिए मिला है, वह भोग करने के लिए नहीं मिला है और जब सारा दृश्य एक एक कर के सामने आया तो हमने तो इतना ही कहा कि एक्सप्लेन कर दीजिये । मुझसे कहा गया कि आप बतलाईए क्या एक्सप्लेन करें, तो हमने कहा कि जो चार्ज लगा है उसको एक्सप्लेन करिये । जो आप

पर आरोप लगा है उसका उत्तर दे दीजिये बिन्दुवार । उत्तर देने की स्थिति में नहीं थे । कानून का सहारा बता रहे हैं ।

(व्यवधान)

जनता सबसे बड़ी कोर्ट होती है, जनता सबसे बड़ी अदालत होती है और जनता के प्रति प्रतिबद्धता हमारा है जनता की सेवा करने का, एक परिवार की सेवा करने का नहीं है और ये जो राज मिलता है वह है योग, यह है सेवा, राज भोग के लिए नहीं मिलता है, मेवा के लिए नहीं मिलता है और अब स्थिति आ गयी कि मेरे लिए डिफेंड करना संभव नहीं था । जनता दल(यू0) का आजतक जबसे हमने समता पार्टी का गठन किया है और आगे जनता दल (यू0) हमलोगों का एक रास्ता रहा है राजनीति में और उस रास्ते से हम नहीं भटक सकते हैं इसलिए हमने समझा कि मेरे लिए अब यह चलाना संभव नहीं है तो हमने अपने आपको अलग किया और यही एलान किया कि जो राज्य के हित में होगा, बिहार के हित में होगा वह फैसला लेंगे । हमने जो भी फैसला लिया है बिहार के हित में लिया है और बिहार के विकास के हित में लिया है और आपको मैं बतला दूं अध्यक्ष महोदय, जब हमलोग एन0डी0ए0 में थे एक साथ थे, आज सेकुलरिज्म की बात कर रहे हैं, भागलपुर में दंगा हुआ था । फाईनल रिपोर्ट सब्मिट हो गयी थी हमलोगों की सरकार बनी तो दुबारा हमलोगों ने जांच कराया और कितने केसेज को ओपेन किया, कम्पेनसेसन की राशि बढ़वाई, कितने लोगों की जमीन पर कब्जा हुआ था उन सब चीजों को रास्ता निकालने का प्रयास किया । हमने इस बिहार में परित्यक्ता जो महिलाएं हैं उनके लिए स्कीम बनाई । अल्पसंख्यक समुदाय के वैसे छात्र छात्राएं जो मैट्रिक फर्स्ट डिवीजन से पास करेगी उनके लिए 10 हजार रू0 के स्कीम की घोषणा की और यही नहीं कब्रिस्तान के घेराबंदी की योजना बनायी । अल्पसंख्यक कल्याण के लिए काम किया । सेकुलरिज्म विचार का चीज, सेकुलरिज्म भ्रष्टाचार पर पर्दा डालने के लिए नहीं है । (क्रमशः)

टर्न-10/मधुप/28.08.17

..क्रमशः...

श्री नीतीश कुमार, मुख्यमंत्री : सेक्युलरिज्म सिर्फ शब्द का इस्तेमाल करने के लिये नहीं है । यहाॅ लोग सेक्युलरिज्म का पाठ पढ़ाते हैं ? हमको सेक्युलरिज्म का पाठ इस देश में कोई नेता नहीं पढ़ा सकता है । हम जानते हैं कि इनलोगों की क्या स्थिति है । ये सेक्युलरिज्म का इस्तेमाल करते हैं अपने पाप और अपने जो काम हैं, उनको छिपाने के लिए, उसको बचाने के लिए । हम विचार से सेक्युलरिज्म के समर्थक हैं और विचार से हम राजनीति

में पारदर्शिता के समर्थक हैं । किसी भी तरह से अगर धन-सम्पत्ति अर्जित करने के लिए कोई राजनीति करेगा, हम उसका साथ नहीं दे सकते हैं । यह हमारा संकल्प है ।

इसलिए महोदय, बिहार के हित में, राज्य के हित में न्याय के साथ विकास के हित में यह फैसला जनता दल (यू) ने लिया है । मैं धन्यवाद देता हूॅं बी0जे0पी0 और तमाम पार्टी, चाहे हम पार्टी हो, लो0ज0पा0 हो, रा0लो0स0पा0 हो, उन सबको और जो निर्दलीय विधायक हैं, उन्होंने जो समर्थन का ऐलान किया है, मैं उनका तहेदिल से शुक्रिया अदा करता हूॅं । सरकार आगे चलेगी, बिहार की खिदमत करेगी । अबतक एक ऐसी परिस्थिति रही है कि केन्द्र में दूसरी सरकार और राज्य में दूसरी सरकार, अब यह पहली बार मौका मिला है कि केन्द्र और राज्य में एक प्रकार की सरकार । बिहार तरक्की की ऊंचाईयों को प्राप्त करेगा । न्याय के साथ विकास के रास्ते पर चलेगा । भ्रष्टाचार को और अन्याय को हमलोग बर्दाश्त नहीं करेंगे । समाज का जो माहौल हो गया है, लोगों को भ्रम है । सुशील मोदी जी ने 2010 का रिजल्ट बता दिया है । इसलिए जनमत के बारे में भ्रम न पालें । जनता में तो गरीब-गुरबा, अति पिछड़े, दलित समाज के लोग, दुखी हो रहे थे । जिस प्रकार का व्यवहार सत्ता में आने के बाद लोगों के साथ गॉव और देहात में दुर्व्यवहार होने लगा था, लोग परेशान थे । जिन्होंने वोट किया, वे आज परेशान थे । इसलिए आज सबके हित में, राज्य के हित में यह फैसला लिया गया है । अहंकार के शिकार मत होइये, याद रखिये ।

मैं तो एक-एक बात का जवाब दे सकता हूॅं लेकिन महोदय, मैं सम्मान करता हूॅं आपके आसन से निर्णय हुआ है, इसलिए पौने एक बजे के पहले सारी जो आज की कार्यवाही है, वह पूरी हो । इसलिए मैं अपनी इतनी ही बात कहूॅंगा, आगे और सारी बातें मैं कहूॅंगा । बाहर भी कहूॅंगा, यहॉं भी कहूॅंगा । लोगों को मैं आईना दिखाऊंगा। इसलिए जरा सचेत रहें । बहुत सारी बातों को जो बोलते हैं, हम मर्यादा पालन करते हैं । हम अकारण नहीं बोलते हैं लेकिन अगर कोई इसके लिए मजबूर करेंगे तो हम तो पूरा का पूरा आईना दिखायेंगे, एक-एक बात पर हम उसका जवाब देकर आईना दिखायेंगे । लेकिन आज इतना ही ।

बिहार के हित में यह सरकार कार्य करने के लिए प्रतिबद्ध है । भ्रष्टाचार के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति पर, सुशासन के लिए, गवर्नेंस के लिए हमारी सरकार काम करेगी, समाज के हर तबके के हित की रक्षा होगी । बिहार तरक्की की नई ऊचाईयों को प्राप्त करेगा । इसी आश्वासन के साथ मैं पुनः निवेदन करता हूॅं सदन से कि यह विश्वास मत के प्रस्ताव को पारित करे ।

अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण !

प्रश्न यह है कि

"यह सभा वर्त्तमान राज्य मंत्रिपरिषद् में विश्वास व्यक्त करती है ।"

जो इस प्रस्ताव के पक्ष में हैं, वे हॉं कहें ।

जो इस प्रस्ताव के विपक्ष में हैं वे ना कहें ।

मैं समझता हूँ कि हॉं के पक्ष में बहुमत.....

(इस अवसर पर विपक्ष के माननीय सदस्यगण अपनी-अपनी सीट पर कुछ कहते हुए खड़े हो गये ।)

अध्यक्ष : बैठिये-बैठिये । मैं एक बार फिर से रखता हूँ ।

जो इस प्रस्ताव के पक्ष में हैं, वे हॉं कहें ।

जो इस प्रस्ताव के विपक्ष में हैं वे ना कहें ।

मैं समझता हूँ कि हॉं के पक्ष में बहुमत.....

(इस अवसर पर विपक्ष के माननीय सदस्यगण अपनी-अपनी सीट पर फिर कुछ कहते हुए खड़े हो गये।)

अध्यक्ष : बैठिये ।

माननीय सदस्यगण, अब विभक्त होकर मतदान की प्रक्रिया अपनायी जायेगी । जो प्रस्ताव के पक्ष में हैं, वे "हॉं कक्ष" में जायेंगे और जो विपक्ष में हैं, वे "ना कक्ष" में जायेंगे । दोनों कक्षों में माननीय सदस्यों की नामावली रखी हुई है । वहॉं आप अपने नाम के सामने जैसे आप अपनी उपस्थिति में हस्ताक्षर करते हैं, वैसा हस्ताक्षर करेंगे । तत्पश्चात् जब पुनः घंटी बजेगी तो सभा-वेश्म में आप प्रवेश करेंगे ।

सभा सचिव, घंटी बजायी जाय ।

श्री अब्दुल बारी सिद्दकी : महोदय, गुप्त मतदान कराया जाय ।

(व्यवधान)

अध्यक्ष : शांत रहिये ।

(घंटी)

माननीय सदस्यगण, "हॉं कक्ष" और "ना कक्ष" में जाइये ।

टर्न-11/आजाद/28.07.2017

अध्यक्ष : सभा सचिव, घंटी बजायी जाय और द्वार खोल दिया जाय ।

(घंटी)

सभा सचिव । घंटी बंद करें ।

माननीय सदस्यगण । वर्त्तमान राज्य मंत्रिपरिषद् में विश्वास प्रस्ताव पर ....

श्री तेजस्वी प्रसाद यादव,नेता विरोधी दल : लेकिन महोदय, हमने अपील किया था कि गुप्त मतदान कराया जाय ।

अध्यक्ष : इसमें गुप्त मतदान की कोई गुंजाईश नहीं होती है न ।

(इस अवसर पर विपक्ष के माननीय सदस्यगण द्वारा सदन से बहिगर्मन किया गया)

अध्यक्ष : वर्त्तमान राज्य मंत्रिपरिषद् में विश्वास प्रस्ताव पर विभक्त होकर मतदान का जो फल आया है, वह निम्न प्रकार है :-

प्रस्ताव के पक्ष में - 131
प्रस्ताव के विपक्ष में - 108

अतः प्रस्ताव स्वीकृत हुआ । वर्त्तमान राज्य मंत्रिपरिषद् में विश्वास प्रस्ताव पारित हुआ।

माननीय सदस्यगण, अब सभा की बैठक अनिश्चित काल तक के लिए स्थगित की जाती है ।

.....